

JAMMU


18/H
29-3-73

Ved Mandir Library
No. 7/H
Date 23.3.73
JAMMU

Ved Mandir Library
No. 7/H
Date 23.3.73
JAMMU.

ॐ

अथ महेश पुष्पाञ्जली

रचिता

श्री मती महेश्वरी देवी जी

कुटिया श्री स्वामी कमल दास जी हरिद्वार

लेखिका

श्री मति कौशल्या रानी

संशोधका

श्री मति राज कुमारी

धर्म पत्नि लाला लुड़ीदा राम जी

प्रकाशिका

श्री मति भगवन्ती देवी

धर्म पत्नि पं० कैशो राम जी छिब्बा

॥ लुधियाना निवासी ॥

(मूल्य श्रद्धा)



श्री १०८ माता महेश्वरी देवी जी

[ज्ञान विराग भक्ति के भजन]

ग्रथ महेश पुष्पाञ्जली

रचिता

श्री मती महेश्वरी देवी जी

कुटिया श्री स्वामी कमल दास जी हरिद्वार

लेखिका

श्री मती कौशल्या रानी

संशोधका

श्री मती राज कुमारी

धर्म पत्नि लाला लुड़ीदा राम जी

प्रकाशिका

श्री मती भगवन्ती देवी

धर्म पत्नि पं० केशो राम जी छिब्बा

॥ लुधियाना निवासी ॥

मिलने का पता :—

श्री १०८ माता महेश्वरी देवी जी

कुटिया श्री स्वामी कमल दास जी हरिद्वार

विषय सूची

भूमिका

महात्माओं द्वारा लिखित अनेकों मोक्ष सम्बन्धी ग्रन्थ जज्ञासुयों के लिए प्रकाशित हैं और उनके द्वारा कई एक सज्जनों को लाभ भी प्राप्त हुआ है। परन्तु अधिक विद्या के अभाव के कारण बहुत सी माताएँ वा बहनें प्रायः इससे वंचित ही देखी गई हैं। क्योंकि मुझे कई स्त्री सत्संगों में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वहां पर इसी त्रूटि को देखकर कुछ संकल्प भी हुआ और कुछ माईओं की प्रेरणा से अपनी बुद्धी अनुसार यह छोटा सा ववेक लिखने का विचार हुआ। वैसे तो बड़ा ववेक भी है जिसमें विस्तार पूर्वक आत्म तत्व का निर्णय किया गया है जो महेश यज्ञ और महेश हृदय में छपा है। क्योंकि यह ग्रंथ विशेष कर उन माईयों के लिये लिखा गया है जो अधिक पढ़ी लिखी नहीं हैं इसलिये इसमें छोटा और सरल ववेक ही रखा है। जिस प्रकार छोटी श्रेणी के विद्यार्थियों को छोटा भूगोल बताते हैं और फिर ज्यों २ वह अधिक योग्य होते हैं त्यों २ वही बात अधिक विस्तार से उन्हें बताई जाती है। शास्त्र में लिखा है —

"बिना प्रयोजो मन्दोपि न प्रवर्तते" अर्थात बिना प्रयोजन के मन्द पुरुष भी किसी कार्य को नहीं करते। यद्यपि इस ग्रंथ का मुख्य उदेश्य मोक्ष सिद्धी है परन्तु मोक्ष सिद्धी, बिना गुरूभगती के प्राप्त नहीं हो सकती इसलिये उदाहरणार्थं कुछ गुरूभगती और वैराग्य के भजन भी इस ग्रंथ में रखे हैं। लिखा है कि —

"यस्य देवे परा भगवक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ,
तस्यै ते कथिताह्यार्थः प्रकाशयन्ते महात्मना"

अर्थात उसी अधिकारी पुरुष को ब्रह्म आत्म तत्व की एकत्वता का साक्षात्कार होगा जो ईश्वर के समान गुरू में भगती रखे। आशा है माताएँ वा बहनें इसे पढ़ कर किये हुये परिश्रम को सफल करने की अवश्य चेष्टा करेंगी। मैं कोई विदूषी नहीं हूं केवल सजातीय होने के कारण स्त्री जाति से ममत्व है इसलिये उनके हितार्थ यह ग्रंथ रचा है॥

॥ ॐ श्री गुरुदेवाय नमः ॥

अथ महेश पुष्पाञ्जली प्रारम्भः

प्रातः काल की आरती

ॐ जै सच्चिदानन्दम् -स्वामी जै सच्चिदानन्दम्
बोधमयं गुरुदेवं-ज्ञानमयं गुरुदेवं
श्री सच्चिदानन्दम्-ॐ जै सच्चिदानन्दम् ॥ टेक ॥

ॐ सत्यम् गुरुदेवं-ॐ सत्यम् गुरुदेवं
बोधमयं गुरुदेवं- ज्ञानमयं गुरुदेवं
श्री सच्चिदानन्दम् ॐ जै० ॥

ॐ चित्तम् गुरुदेवं-ॐ चित्तम् गुरुदेवं
बोधमयं गुरु देवं-ज्ञान मयं गुरु देवं
श्री सच्चिदानन्दम् ॐ जै० ॥

ॐ अनन्दम् गुरुदेवं-ॐ अनन्दम् गुरुदेवं
बोधमयं गुरुदेवं- ज्ञान मयं गुरुदेवं
श्री सच्चिदानन्दम् ॐ जै० ॥

ॐ अखिलम् गुरुदेवं-ॐ अखिलम् गुरुदेवं
बोधमयं गुरुदेवं-ज्ञानमयं गुरुदेवं
श्री सच्चिदानन्दम् ॐ जै०॥

निर्गुण सच्चिदानन्द स्वामी जी की आरती जो गावे
सवामी प्रेम सहित गावे, पिता जी प्रति दिन जो गावे
कहत महेश हमेशा-हो निखलानन्दम्
ॐ जै सच्चिदानन्दम्

ॐ जै सच्चिदानन्दम्-स्वामी जै सच्चिदानन्दम्
योगमयं गुरुदेवं-ज्ञानमयं गुरुदेवं
श्री सच्चिदानन्दम् ॐ जै०॥

ध्यान मूलम् गुरु मूर्ति, पूजा मूलम् गुरु चरण।
मंत्र मूलम् गुरु वाक्यं, मोक्ष मूलम् गुरुकृपा ॥१॥
अज्ञान मूल हरणं,:जन्म कर्म निवारणं।
ज्ञान वैराग्य सिद्धयर्थं- गुरु पादोदकं पिबेत् ॥२॥

(प्रभु प्रार्थना)

जै कच्छ मच्छ वराह नरसिंह, नर हरि जै जै प्रभो
परशु राम राम औ कृष्ण बुद्ध, कलंक निस जै जै विभो ॥१॥
जब जब धर्म की हानि होवत, तब हरि तुम अवतरो
अब तो धर्म की हानि है, भगवान रत्ता को करो ॥२॥
जब भीड़ थी गज राज पर, आये मेरे भगवान जी
कई धर्म पर कुरबान हुए, नहीं करते अब प्रभु ध्यान जी ॥३॥
हे दीन दयालु [कृपालु भगवन, जन जान रत्ता कीजिए
हे ज्ञान प्रकाश स्वसंत की, गो विप्र की सुध लीजिए ॥४॥

श्लोक

ॐ सर्वाकारो निरा कारो, सच्चिदानन्द लत्तणम्
नीराकार मभूत ब्रह्म, तस्मै गंगा आत्मने नमः ॥१॥
दृष्ट्वा जन्म शतं पापं, पीत्वा जन्म शत्तद्वयम्
सनात्वा जन्म सहस्रंश, हन्ति गंगा कल युगे ॥ २॥

आकाशात्पतितं तोयं, यदा गच्छति सागरम् ।
सर्व देव नमस्कारं, केशवं प्रति गच्छति ॥३॥

(जगद्गुरु श्री शंकराचार्य कृतगुरु. अष्टक का अनुवाद)

सुन्दर होय शरीर, अधिक परिवार भी होय ।
प्रभु पद कमल रती नहीं, धृग २ जन्म विगोय ॥१॥
धन माल गृह बहुत हैं, पुत्र पौत्रादिक जोय ।
गुरु चरनन में रती नहीं, धृग २ जन्म विगोय ॥२॥
चार वेद षट अंग जिह्वाग्रे, गद्य पद्य कवि सोय ॥३ गुरु०॥
देश विदेश में मान अति, शिष्टाचार मल धोय ॥४॥गुरु०
यश दान में चतुर भी, गुरु प्रसाद सब होय ॥ ५ गुरु०॥
राज सभा में मान जो, विदित चहूं दिस जोय ॥६॥ गुरु०
भोग योग अबला वित, न राज बाज गज मोय ॥७॥गुरुरु०॥
वन गृह तन कार्य विखे, नहीं मान लिपत भी होय ॥८॥गुरु०॥
हीरे मोती जड़त गृह, कामनी रजनी संगोय ॥६॥गुरु०॥
गुरु अष्टक को जो पढ़े, यति भूप गृही ब्रह्मचार ॥
मन वांच्छित ब्रह्मपद मिले, जो गुरु वचन पियार॥१०गुरु०॥
गुरु अष्टक भाषा किये, महेश्वरी बुद्धि अनुसार ।
गुरु भक्ति की लटक कुछ, नहीं विद्या अधार ॥११गुरु० ॥

श्लोक

श्री गुरो भगवन दीन, बन्धोऽहं शर्णं गता।
हृच्छल्यं हर दुरभेद्यं, दया सिंद्धो नमोस्तूते ॥१॥
नित्य शुद्धं निराभासं, निराकारं निरञ्जनम् ।
नित्य बोधं चिदानन्दं, गुरुं ब्रह्म नमाम्यहम ॥२॥

भोग विधि

सतगुरु जी मैं काहे का भोग लगाऊं, प्रभु जी मैं काहे की भेट चढ़ाऊं।
योग आप के इस जग माहीं, कोई पदार्थ दीखत नाहीं।
मैं सोच सोच घबराऊं ।।टेक।।
जल न चढ़ाऊं मच्छली का जूठा, मैं किस से स्नान कराऊं।
मेरे सतगुरु परम दयालु, मैं आंसू से चरण धुलाऊं ।।सत।।१।।
चन्दन न चढ़ाऊं सर्पों ने सूंघा, मैं काहे का तिलक चढ़ाऊं।
सत्यभाव श्रद्धा से पूर्ण, प्रेम का तिलक लगाऊं ।।सत।।२।।
पुष्प न चढ़ाऊं भौरे ने सूंघे, मैं किस से पूजा कराऊं।
मेरे सतगुरु अन्तरयामी, मैं मानसी पूजा सजाऊं ।।सत।।३।।
फल न चढ़ाऊं पक्षियों के जूटे, मैं काहे की भेट चढ़ाऊं।
शीश उतार करूं प्रभु भेटा, मैं बिन सिर सेव कमाऊं ।।सत।।४।।
दूध न चढ़ाऊं बछड़े का जूठा, मैं किस का भोग लगाऊं।
आपका दीया आप को अरपूं, मैं तन मन वार दिखाऊं ।।सत।।५।।
लड्डू वा पेड़े मक्खियों के जूठे, किसका प्रसाद बटाऊं।
लोक लाज कुल लाज का बांटू, मैं निशंग दास कहलाऊं ।।सत।।६।।
दास हमेश की बेनती है इक, सतगुरु देव सुनाऊं।
देह अभिमान न छोवे सतगुरु, गुरु भगती वर पाऊं ।।सत।।७।।

(सायं काल की आरती)

ॐ जैं सतगुरु देवा-स्वामी जैं सतगुरु देवा
जो जन सेव कमावे, फल पावें मेवा ।। उं जै० ।।टेक।।

सतचित्त आनन्द रूप तुम्हारो, वेद श्रुति गावे स्वामी वेद० ।
गुरु भक्ति फल एही, ब्रह्मानन्द पावे ॥ओं जै०॥१॥
जाल सकल को छोड़, शरण सत गुरु जावे स्वामी शरण ० ।
जन्म मरण भय छूटे, सुख सम्पति पावे ॥ओं जै०॥२॥
मात पिता सम रक्षक जन के प्रति पालक-स्वामी जन
दोष दर्द के नाशक, तमके हैं घायक ॥ओं जै०॥३॥
दीन दयालू कृपालू, घट २ के वासी-स्वामी घट २ के
दिल की जानन हारे, प्रभु अन्तरयामी ॥ओं जै०॥४॥
बिन करुणा के सागर, हमरा नहीं कोई-स्वामी मेरा
नैय्या पार लगावो, चरण गहूं दोई ॥ओं जै० ॥५॥
धूप दीप नैवेद्य आरती, जो कुछ है तुमरा--स्वामी जो
तुमरा तुमरे अर्पण, क्या लागे हमरा ॥ओं जै०॥६॥
श्री गुरु देव जी की आरती, जो कोई गावे-स्वामी प्रेम
दास महेश बखान्यो, भवते तर जावे ।ओं जै० ॥७॥

श्लोक

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुरेव परं ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥
अखंडमंडलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम ।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥२॥
अज्ञान तिमिरांधस्य, ज्ञानांजन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥३॥

चैतन्यं शाश्वतं शांतं, व्योमातीतं निरंजनम्।
नाद बिंदु कलातीतं, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥४॥
अखंडानन्द बोधाय, शिष्य संताप हारिणे।
सच्चिदानंद रूपाय, रामाय गुरवे नमः ॥५॥
सर्व श्रुति शिरोरत्न विराजित पदांबुजम्।
वेदांताम्बुजमार्तंडं, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥६॥
शुद्धोऽयं सच्चिदानन्दो, विख्यातो लोक सेविता।
भक्तानां सुख कारण, चित्र रूपेण राजते ॥७॥
ब्रह्मानंदं परम सुखदम्, केवलं ज्ञान मूर्तिम्।
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशम्, तत्त्व मस्यादिलक्षितम्।
एकं नित्यं विमल मचलम्, सर्वधि साक्षी भूतम्।
भावातीतं त्रिगुण रहितम्, सद्गुरूं तं नमामि ॥८॥

श्री गुरुदेव प्रार्थना

श्री गुरुदेव बता दियो भेव, न जानूं मैं सेव बारम्बार प्रण
श्री सच्चिदानन्द कटें भव न्द, रहे नहीं द्वन्द कृपा होय जब आ
बार बार विनती करूं, हे पूर्ण सुख धाम।
जन्म मरण दुःख काटियो, देकर अपना नाम ॥
होवो दयाल करो जी निहाल, कट देवो जाल हे प्रभु सुख के धा
होय कृपाल कीयो जी निहाल, दास प्रतिपाल पूर्ण करते हो काम
शीश चरण पर धारकर, मांगूं इक वरनाम।
चरण सेव प्रभु दीजियो, हरण होय भव घाम।

नैय्या मंझधार करो प्रभुपार, शिष्यों का उद्धार करो मेरे सतगुर श्याम।
लियो अवतार पृथ्वी का भार दियो जी उतार, जाप जपा कर नाम॥श्री॥

मानुष तन को पायकर, जप्यो न गुर मुख नाम।
भारत खंड मनुष तनूं, तद्यपि विधाता बाम॥

गुरु वचन जहाज छोड़ कर पाज, श्रद्धा को साज पुरुष होए वा बाम।
छोड़ कुसंग रहो जी असंग, चढ़े हरि रंग मिल जाय ब्रह्म कोधाम॥श्री

काम क्रोध की फौज लै, मोह मचाई लाम।
दियों ववेक वैराग मोहे, जीत लऊं संग्राम।

दियो जी ववेक लई मैं टेक, न लागे सेक सतगुरु मैं वल जाम।
मैं अज्ञान न होवत भान किस विध ज्ञान पूर्ण आत्म राम॥श्री

बहुत जन्म की भटकती, अब पायो गुरु धाम।
त्राहि त्राहि रक्षा करो, मैं अनजान अकाम।

आई गुरु द्वार करो प्रभुपार, न जाऊं मैं हार न जा मैं दूसरो धाम
करे अरज महेश रहे जन्म न शेष, पढ़े जो हमेश कट जायं दुःख के ग्राम

दोहा-पूजा सतगुरु की करूं सभ पूजा जहिं मांहि।
ज्यो जल सिंचे मूल तरु, शाखा पत्र अघाहिं॥१॥
पापों से कृपा बड़ी, गिनती करो न नाथ।
भूल चूक मेरी बखशियो, सिर पर धरियो हाथ॥२॥
श्री गुरु दीन दयाल जी, मैं हूँ अति अंजान।
औगन मेरे बखशियो, यही आप की बान॥३॥

गुरु समरथ सिर पर खड़े, क्या कमी तोहे दास ।
ऋद्ध सिद्ध सेवा करें, मुक्ति न छोड़े पास ॥४॥
बड़ो भरोसो आपको, श्री गुरु दीन दयाल ।
आन पड़ी दर आपके, सतगुर करो निहाल ॥५॥
परम पिता जी दीजिये, मोहे गुरु भगती दान ।
बड़ी आश विश्वासधर, महेश्वरी आई अजान ॥६॥

ऊँ श्री गुरुदेवाय नमः

अथ देह व्यतिरिक्त
आत्म अनुभव ववेक वर्णनम्

दोहा

श्री गुरु परमात्मा, नमों करूं मन लाय ।
जिनकी कृपा दृष्टी से, आत्म अनुभव पाये ॥

पहिले शुद्ध सच्चिदानन्द एक अद्वितीय ब्रह्म था तिस के आश्रय सतो, रजो, तमो तीन गुण युक्त माया शक्ति थी। सो माया तीन प्रकार की है। जब सतोगुण, रजो तमो को दबावे तो शुद्ध सतो गुण माया कहलाती है। रजो तमो यदि सतो गुण को दबावे तो मलिन अविद्या कहलाती है। तीन गुण एक जैसे हो वे तो प्रकृति कहलाती है। तिस माया के सम्बन्ध से जीवों के कर्मानुसार तिस पार ब्रह्म को इच्छा होती भई। एकोऽहंबहुश्याम (अर्थात्) एक से मैं बहुत रूप होऊं सो सूक्ष्म

महतत्त कहलाता है। तिससे पांच भूत होते भये— आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी। पांचों के पांच गुण हैं – शब्द स्पर्श, रूप रस, गन्ध। पांच भूतों के व्यष्टी सतोगुण अंश से पांच ज्ञान इन्द्रियें होती भईं – श्रोत, त्वचा, चक्षू, रसना घ्रांण यथा क्रम से दसदिग्पाल, वायु, सूर्य, वरुण, अश्वनी कुमार पांच ज्ञान इंद्रियों के देवता हैं। यथा क्रम से शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध पांच विषय हैं। पांच भूतों के समष्टी सतोगुण अंश से चतुष्टय अन्तःकरण होता भया। मन, बुद्धि चित्त, हंकार। यथा क्रम से चन्द्रमा, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र यह देवता हैं। यथा क्रम से संकल्प विकल्प मनका, निश्चय करना बुद्धि का, चिन्तन करना चित्त का, अभिमान करना हंकार का धर्म है। पांच भूतों के व्यष्टी रजो गुण अंश से पांच कर्म इंद्रियें होती भईं – वाक, पाणि, पाद, उपस्थ वायू अब यथा क्रम से देवता कहते हैं – अग्नि, इंद्र, विष्णू, प्रजापति, यम, यथाक्रम से बोलना, लेना देना, चलना, भोग, मल त्याग यह विषय हैं। पांच भूतों के समष्टी रजो गुण अंश से पांच प्राण हुए— प्राण, अपान, समान, व्यान उदान। पांच प्राणों की क्रिया वा स्थान यह हैं। प्राण वायु का हृदय स्थान, भूख प्यास क्रिया, अपान वायु का पायू स्थान मलमूत्र त्याग क्रिया, समान वायू का नाभी स्थान, नाड़ी नाड़ी में रस पहुँचाना क्रिया, व्यान वायु का सारे शरीर में स्थान अन्न जल

पचाना क्रिया, उदान वायु का कंठ स्थान स्वास आना जाना क्रिया है। पांच प्राणों के अन्तरगत पांच उपप्राण भी हैं नाग, कूर्म, किरकल, देवदत्त, धनञ्य, डकार, उबासी, छींक. अंकड़, मृत्य शरीर का फूलना यथा क्रम से इनकी क्रिया है। पांच भूतों के तमोगुण अंश से पंचीकरण हुआ। पांच तत आकाश के हैं काम, क्रोध शोक, मोह, भय। पांच वायु के चलन, बलन, धावन पसरन, अकुंचन। पांच तेज के क्षुधा, पियासा आलस, निद्रा, कान्ती। पांच जलके — रुद्र, पसीना, वीर्य लाला, मूत्र। पांच पृथ्वी के हाड़, मांस नाड़ी, त्वचा, रोम। पांच तत्वों के पचीस भयें जैसे पांच मनुष्यों के पास पांच फल होवें तिस के दो दो टुकड़े करें एक एक आधा अपने पास रखें और आधे के चार भाग करें और चारों को बांटे। एक अपने पास था चार दूसरों के मिला कर पांच भये। तिसको पंचीकरण कहते हैं। तिसका स्थूल शरीर हुआ जिसे अन्नमय कोश कहते हैं पांच प्राण, पांच कर्म इन्द्रिया प्राण मय कोश हैं। एक बुद्धि पांच ज्ञान इन्द्रियां विज्ञान मय कोश हैं। यह तीन कोश सूक्ष्म शरीर में हैं। एक मन पांच ज्ञान इन्द्रियां मनोमय कोश है यह सत्तरह तत्त हैं। आनन्द मय कोश कारण शरीर है।

यह पांच कोश आत्मा को अच्छादिन करते हैं। जैसे म्यान तलवार को ढक कर अपने में तलवार बुद्धि कराती है। तलवार

से बिना भी म्यान हो तो दूर से यही कहेंगे, कि तलवार पहने मनुष्य जा रहा है, ऐसे ही तीन शरीर तीन अवस्था के अभिमानी जीवात्मा को यह कोश ढकें हैं। स्थूल शरीर जाग्रत अवस्था के अभिमानी जीवात्मा को विश्व कहते हैं। सूक्ष्म शरीर स्वप्न अवस्था के अभिमानी जीवात्मा को तेजस कहते हैं। कारण शरीर सषोप्त अवस्था के अभिमानी जीवात्मा को प्राज्ञ कहते हैं। सो प्रसंग से जीव ईश्वर का स्वरूप कहते हैं। माया, माया में चेतन का अभास माया का अधिष्टान ब्रह्म तीनों मिलकर ईश्वर का स्वरूप कहते हैं।

अविद्या, अविद्या में चेतन का प्रतिबिम्ब अविद्या का अधिष्टान कूटस्थ तीनों मिलकर जीव का स्वरूप कहते हैं। परंतु वह जाना नहीं जाता सो सतगुरु की अपार कृपा से यह ववेक विचारे तों उसे इतना बोध होता है जैसे मेरे कपड़े मेरा हार इत्यादि आभूषण कहने हारा आभूषणों से भिन्न होता है ऐसे ही मेरा शरीर, मेरा मन, मेरी इंद्रियां कहने हारा इनसे भिन्न ही होना चाहिए। सो आत्मा सत, चित्त आनंद स्वरूप वेदों में लिखा है। त्रयकाल अवाध सत्त है, अलुप्त प्रकाश चित्त है, दुःख सम्बंध से रहित आनंद है। सो आत्मा अरोप-अपवाद की रीति द्वारा अन्वय व्यतिरेक युक्ति से गुरु मुख द्वारा विचारने से सुनने से पूरा लाभ होता है। जिस अधि-

कारी को अधिक निर्णय विवेक का करना हो वह महेश हृदय वा महेश यज्ञ में देखे। तिस जज्ञासू को पूरा बोध होगा। परन्तु जज्ञासु भी चार साधन सम्पन्न हो, गुरु जी भी ब्रह्म श्रोती ब्रह्मनिष्ठी हों, तब निर्सन्देह आत्म ज्ञान होगा। जैसे कोई भी वृत्त हो फल समयानुसार लगेगा बिना समय के चाहे कितनी वर्षा हो तो भी फल नहीं मिलता (अथातो ब्रह्म जज्ञासा) अर्थात् चार साधनों से अनन्तर अधिकारी होता है। सो चार साधन यह हैं—ववेकः वैराग्य, षटसम्पति, ममुत्तता। सत असत के जानने को ववेक कहते हैं। इस लोक और परलोक के भोगों की इच्छा से रहित हो यह वैराग्य है। शम, दम, श्रद्धा, समाधान, उपराम, ततित्ता यह षट सम्पति है। मनके रोकने को-शम-कहते हैं। इन्द्रियों को बाहर से रोकना—दम-कहलाता है।

सत गुरू और सत शास्त्रों में विश्वास का होना श्रद्धा कहलाती है। गुरू और वेदान्त शास्त्र में अटूट विश्वास हो, आपत्ति पड़ने पर भी विश्वास का त्याग न हो। गुरूदेव बड़ी परीत्ताएँ लेते हैं। शिष्य के मन में यही विश्वास हो कि वह कभी धोखा नहीं देंगे। जो धोखा दे वह गुरू ही नहीं। एक जज्ञासू सोया पड़ा था तब उसके निकट एक सांप काटने के लिए आरहा था। गुरू महाराज तलवार लेकर उसकी छाती पर बैठ गये। सर्प को तो वह वैसे भी मार सकते थे परन्तु उन्होंने शिष्य की परीत्ता भी लेनी थी। जब शिष्य ने देखा कि गुरू महाराज जी

तलवार लिये छाती पर बैठे हैं तो उसे सन्देह हुआ कि कहीं मुझे मार न दें। परन्तु उसे दृढ़ विश्वास था इस लिये तुरन्त ही मन में आया कि गुरू कभी शिष्य का बुरा नहीं करते, साथ ही शास्त्र पर विश्वास था (गुरूयों ही हित्तोपदेष्टा)गुरू वही हैं जो हित का उपदेश दें। इसका नाम श्रद्धा है। चित्त को अपने इष्टदेव में स्थित रखना इसी का नाम समाधान है। स्त्री से लेकर सर्व विषयों में ग्लानि हो उसे उपराम कहते हैं---प्र०(मुक्ति मिच्छसी तात्‌ - विष्यान्विषवत्तज्) अर्थ हे! जनक तात्‌ अर्थात पुत्र यदि मुक्ति की इच्छा है तो विषयों को विष के सदृश्य जानकर त्याग दे। सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, हर्ष, शोक आदि को सहन करने का नाम ही ततिक्षा है। प्र०- आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्ति तिक्षस्व भारत

अर्थ -- हे अर्जुन यह सर्व पदार्थ आगमा पाई है अर्थात आने जाने हारे है. इनको सहन कर। चतुर्थ साधन मुमुक्षता है क्योंकि यह सर्व साधन मोक्ष के लिये ही करे जाते हैं। परन्तु ऐसी तीव्र इच्छा मोक्ष की हो जैसे किसी को आग लगी हो, और घर में कोई बुझाने वाला न हो तो वह "पानी पानी" पुकारता पड़ौस में दौड़ा आता है। यदि कोई पूछे कि कैसे लगी तो वह सिवाय पानी के और उत्तर नहीं देता। इसी प्रकार मोक्ष के इच्छुक को मुक्ति बांछा होती है अन्य पदार्थों की नहीं इसे मुमुक्षता कहते हैं। यह चतुष्टय साधन ऐसे हैं जैसे खाने पीने के

बिना अन्न जल के कहने मात्र से भूख प्यास नहीं मिटती ऐसे बिना इन साधनों के गुरु शास्त्र भी कुछ नहीं कर सकते। इन चार साधनों में भी गुरू भगति मुख्य है। विचार माला में लिखा है :—

मुक्ति द्वार पालक चतुर, सम सन्तोष विचार।
चौथो सतसंगत धर्म, महा पूज्य निरधार।

अर्थात मुक्ति के चार दरवाज़ों में चार द्वारपाल हैं।

सम, सन्तोष, विचार, परन्तु चतुर्थ सत्संग है। यह इन सब से उत्तम और पूज्य धर्म है। क्योंकि सत्संग द्वारा ही सर्व साधन प्राप्त होते हैं। भय बिन भगती न होय, अपने आप अभ्यास की युकति नहीं आ सकती। इसलिये सतगुरू पास जावे (समित्पाणि) अर्थात हाथ में भेटा लेकर जावे। श्री गुरू शिष्य को योग्य जान कर शास्त्रानुसार उपदेश करते हैं। तिस आत्मा की इच्छा हारे जज्ञासू को प्रथम ओं की ही उपासना कही है। तहां प्रमान—

ओमित्येकात्तरम् ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरण
यः प्रयाति त्यजन्देहं सयाति परमां गतिम्

अर्थातः इस ओं अत्तर रूपी ब्रह्म को चिन्तन करता हुआ जो देह को त्यागता है सो मेरी परम गति को प्राप्त होता है— तहां प्र०— यदगत्वा न निवर्तन्ते, तद्धाम परमं मम।

सो ऽ हंग्रे उपासना यह है। अकार, उकार, मकार, अर्ध बिन्दू, यह चार पद ओं के हैं। विराट, हिर्णगरभ, वैश्वानर,

ब्रह्म, यह चार पाद ईश्वर के हैं। विश्व, तेजस, प्राज्ञ, तुरिया, यह चार पाद जीव के हैं। विश्व का विराट में लय करे, विराट को अकार में लय करे, तेजस को हिरण्यगर्भ में लय करे, हिरण्यगर्भ को उकार में लय करे। प्राज्ञ को वैश्वानर में लय करे, वैश्वानर को मकार में लय करे, तुरिया को ब्रह्म में लय करे, ब्रह्म को अर्धबिन्दू में लय करे। अकार का उकार में लय करे उकार का मकार में लय करे मकार का अर्धबिन्दू में लय करे सो अवाच्यपद है। इसमें मन स्थिर करने के लिये ओं का जाप इस विधी से करे। चार प्रकार की वाणी हैं। वैखरी, मध्यमा, पश्यन्ति, परा। वैखरी से सौ की गिनती द्वारा एकही स्वास से ओं का जाप करे। कमसे कम पांच धुनी से लेकर नित प्रति एक बढ़ाता जाय सौ तक ले जाय। इस प्रकार एक हजार ओं का जाप एक सौ स्वास में हो सकता है। मध्यमा में ओं की मात्रा का लय चिन्तन करे पीछे लिखी युक्ति द्वारा। आगे पश्यन्ति में — इड़ा, पिंगला, सुषमना ईन तीनों स्वरों से ओं का जाप करे। स्वास को अन्दर ले जाने में पांच गिनती ओं का जाप करे अन्दर ठहरा कर स्वास को दस ओं, बाहिर आने में पन्द्रह ओं, बाहिर ठहराने में बीस ओं पुनः स्वास को अन्दर ले जाय तो पचीस ओं का जाप करे। जब इतना अभ्यास कर ले तो एक २ बढ़ाता जाय। इससे वृत्ति धीरे २ ठहरने लगती है। इसी को ही परा कहते हैं। तुरिया चतुर्थ अवस्था समाधि कहलाती है। जब एक, दो का अंक उठ जाय तो सिफर का कुछ अर्थ सिद्ध नहीं होता। इसमें किसी गुरमुख

जज्ञासू की इस्थिति होती है। तुरिया तीत में तो जीवन
ही विचरते हैं। इसी लिये भगवान ने अर्जुन से कहा है:–

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।
निर्द्वन्द्वोनित्य सत्त्वस्थोनिर्योगक्षेम आत्मवान्॥

अर्थात तीन गुणों से रहित जीवन मुक्त ही हो सकता

दोहा– परा पश्यन्ति मध्यमा, वैखरी वाणी चार।
परा बीच सब लय हुई, अर्ध बिन्दू आधार॥१॥
वस्तु मांहि अवस्तू का, कथन आरोप बखान।
जान वस्तु अपवाद यह, लय चिन्तन पहचान॥२॥
श्री सतगुरू कृपा कटाक्षते, महेश कियो अलाप
आत्म अनुभव ववेक का, इति श्री भयो सो आप॥

इसी ववेक को विचार कर माई मूलो देई ने अन्त स
तीन बार ओं का उच्चारण कर शरीर त्यागा। जिसकी का
आगे लिखते हैं।

ओं श्री गुरूदेवाय नमः
माई मूला देवी जी की
अल्प जीवनी वर्णन

(१)

ऐत अपने सतगुरु देव तांई, करूं वन्दना अनेक प्रकार
फेर बन्दना करूं पूज पिता ताई, जिना वंधी सतिसंग दी धार

नाल आप तरे सतसंग तारा, तार दिता है कुल परिवार बहनो।
परिवार के बीच भी एक जोड़ी, महेश उन्होंका सुनो विचार बहनो।१।

(२)

सोम सार वस्तु सदा होय कमती, दूध सेर ते घी छिटांक सारा।
तिनां भाईया दे विच इक भाई था जो, नाम था गुरदिता गुरुदेव प्यारा।
भाई भरत समान ही देख्या मैं, बड़े भाई दा रखदा मान भारा।
मोतीराम गुरदिता राम भरत जैसे, गुरु शिष्य का महेश यह चमत्कारा।

(३)

मगल मंगल रूप थी पत्नी गुरदितामलकी, नाम मूलादेई धर्ममूल जानो।
पहिला धर्म पाला पतिवृता वाला, पति आज्ञा ते सेवा कबूल जानो।
दूजा धर्म कुटम्ब परिवार सबसे, यथा योग व्यवहार दी पुल जानो।
छोटे २ बच्चे पाल योग कीते, महेश बुद्धि दिमाग अतुल जानो।

(४)

बुधवार बुद्धि कैसी शुद्ध उसकी, लद अपने को भी जान लीता।
साधू सेवा गुरु भगति कमा करके, अमृतसार प्यालड़ा घोल पीता।
तन मन ते धन तीनों वार दिते; दान सिमरन सेवा अंत तक कीता।
धन २ है ऐसियां देवियां को, महेश शीतल स्वभाव था वांग सीता।

(५)

वीरवार ते वार मैं सोचदी हां, कवन पुन कीता माता मूला देई।
सारे कम न किसे ने पूरे कीते, जिवें पूरे कीते माता मूला देई।
सारे धर्म पाले नाले शर्म पाले, कुलदीप होई माता मूला देई।
सतसंग दे विच तो मुखिया थी, महेश घराने दी तुल थी मूलादेई।

(६)

शुकर २ करदी अतिथि देखके जी, गृहस्थी, साध महमान दा मान
हर तरह सेवा सत्कार करदी, अठे पहर रहंदा मानो लंगर जा
कलयुग दे विच शान्ती धर्म मूर्ति, नहीं देखी मैं ऐसी कुलवन्त
जै जै कार पाई कुल जहान उते, महेश आप तरी सारी कुल ता

(७)

छन छन छानते बीन कर देखिया मैं, श्रद्धा प्रेम सच्चा जैसे साथ
साक नाते दी अंश ना रंच जाने, गुरु भाई शिष्य प्रेमी सच्चे जिगर
शुरु लेकर आखीर तक प्रेम सच्चा, सिर नाल निभाया आन
अज तक न निभिया किसे दा जी, महेश माताजी रहे ज्यूं साथ

(बारह मांह)

चेतर चिंतन करूं पहिले सतगुरां दा।
जिथे शुद्ध ते बुद्ध दी खबर मोई॥
क्रिपा पाय के पुरे सतगुरां दी मैं,
सुधर गये हैं लोक परलोक दोई।
बलहार जावां ऐसे गुरां उत्तों,
कृपा जिना दी नाल इह गत होई।
चाची करके जदों बुलावते थे,
महेश पाप सारे दिते तभी धोई ॥ ॥
विसाख विसार परिवार सारा,
गुरु आज्ञा में मन धारिया सी।

दहीं विचों ज्यों मखन निकाल करके,
फिर लसी दे विच ही डारिया सी।
व्यवहार दा कम जरूर कीता,
परमार्थ भी साथ सवारिया सी।
पूरीयां होन क्यों न इच्छा सब उनकी,
महेश गुरां पर निश्चय धारिया सी ॥२॥
जेठ जोर दे नाल मैं अरज करदी,
भैनो असी बी ऐसा कम फड़िये।
सेवा गुरां दी करके दिल सच्चे।
सिमरण ओं दा जिवा दे उपर धरिये।
जदों आवेगा समां अंत दा जी,
क्यों न मोह समुन्द्र दे उतो तरिये।
अन्त मता ते सोई गता कहंदे,
माता मूलां दी तरह महेश करिये ॥३॥
हाड़ हरी ते भरी सन्तान सारी,
इथे यश ते अगे मोच्च होई।
मूंह मंगी मुराद न होय पूरीं,
माता मूला दी जिवे सी पूरी होई।
मूल नाम है मुढ जड़दा जी,
जिथे धर्म ते शर्म दी बेल बोई।

तिस वेल दे तीन ही फल सुन्दर,
महेश यही तो शान्ति का फल होई ॥४॥
सावन सोच विचार के देख लीता,
शान्ति नाल होवे औलाद जोई।
धर्मात्मा ज्ञानी सूर वीर होवन,
माता पिता दी आज्ञाकार होई।
ऐसे लक्षण न होवे सन्तान अन्दर,
माता पिता दा बृथा ही नूर खोई।
सारी कृपा तो यह सतगुरां दी है,
महेश सारी ही भूलो दी मैल धोई ॥५॥
भद्रे भार सारा जिनां सुट दिता,
ईश्वर गुरु दे उते ही आन अपना।
दुख दूर चिन्ता ज्ञान जाग्रत होवे,
अज्ञान नष्ट होवे जैसे रैन स्वप्ना।
जो जो मंगे वरदान कुल्ल दुनिया,
मूलां देई नूं मिली सुखेन सुखना।
दुःख रंच नाही प्राण कंठ आई,
महेश अन्त स्वास से ओं जपना ॥६॥
असूं आस ते पास न कुछ रखदे,
शुद्ध सरल स्वभाव और बोल सच्चा।

जिस जिस से प्रेम प्यार कीता,
बचन अपना कीया न कदी कच्चा ।
देखने बीच तों गृहस्थी नजर आवते थे,
सम दृष्टि सबसे चाहे बुढा बच्चा ।
निर्मल शुद्ध दयालू स्वभाव उनका,
महेश साधू स्वभाव का रंग रच्चा ॥७॥
करो करुना रखदे दिल अंदर,
अच्छे बुरे शत्रु मित्र वीच भैनो ।
निंदा उसतत से रहत थे सदा सिमरण,
ओं ओं दा जाप अखंड भैनो ।
मेरे पास भी रही अनेक संगता
किसे नाल न वैर बिरोध भैनो ।
जैसा समां आया वैसा संतोष पाया,
महेश कभी नां उनके क्रोध भैनो ॥८॥
मघर मान हंकार न रत्ती भर का,
सब अगे सदा सेवा दार रहंदे ।
देख देख कर सारे प्रसन्न होवन,
चाची चाची जी सारे लोक कहंदे ।
जगत माता दा मानो अवतार होये,
खिले मुखसे सदा नूर वहंदे ।

बड़े छोटे भी कभी कुछ कहन उनको,
महेश सबदी प्रेम दे नाल सहंदे ॥६॥
पोह पार होई जिवें भूलो माता,
सब भैनों का होवे कल्याण ऐसे।
इह लोक परलोक सब सुधर जावे,
सच्चे ओं का होवे ध्यान ऐसे।
अंत समय न रोग सताय किसनूं,
ओं कह कर निकलें प्राण ऐसे।
तुसां बुरा न मानना सुनन वालो,
महेश मेरी तां निकले जान ऐसे ॥१०॥
मांह मौत तो गजदी सिर उत्ते,
सब देवते वा अवतार दे जी।
रहना किसे नहीं संसार ऊपर,
ज्ञानी ध्यानी वा पुरुष नार दे जी।
सिमरो नाम ते करो कुछ दान करसे,
यह तो आपना एक उधार है जी।
घर बार रह जायगा इथे सारा,
महेश धर्म ही जग ते सार है जी ॥११॥
फगन फर्क न रत्ती भी रखो भैनो,
सच्चे दिल दे नाल पुकार कीजे।

मूलो भाई दी आत्मा शान्त रहे,
पीछे बच्चों को आशीर्वाद दीजे।
सदा करन सतसंग सेवा साधुओं की,
माता पिता दी शिक्षा घोल पीजे।
तीनों भाईयों का सदा ही मेल होवे,
महेश बड़ों की आज्ञा मान लीजे ॥१२॥

(भगत जैराम जी की जीवनी)

ऐत आप के आगे बेनती है,
हथ जोड़ करके गुरुदेव प्यारे।
बेटा लाडला भगत जैराम प्यारा,
रहे आत्मा शान्त हमेश प्यारे।
आज्ञाकारी ते संता दा भगत सच्चा,
सतगुरू देवो आशीश दिल नाल प्यारे।
आप सदा दयालू थे उस ऊपर,
हुन भी करो आखीर दा काम प्यारे ॥१॥
सोम सारा ही जन्म बिता दित्ता,
गुरू भगती दे विच जैराम जी ने।
साधू सेवा दे इक अवतार थे वह,
प्राणों साथ निभाया जैराम जी ने।

पीछे लाल तीनों वह भी निभाते जायें,
जैसे निभाया है भगत जैराम जी ने ।
देवी सरस्वती पर करी है कृपा बहुती,
दिया जन्म सुधार जैराम जी ने ॥२॥
मंगल मंगल वरते पिछे कुल सारी,
शुभ मूल था चरण दास भाई ।
जैराम वा राम अमीर चन्द जी,
तीनों बेटा हुए शोभावान भाई ।
मथुरा देई ते चरण दास जोड़ी,
मानो नीती ते शान्ति अवतार भाई ।
जैसे आप थे धर्म की ध्वजा तैसे,
बेटे हुए हैं आज्ञाकार भाई ॥३॥
बुध बुद्धि वा भगती भंडार थे जो,
लीन होय हैं विच परमात्मा दे ।
रहे आत्मा शांत हमेश उनकी,
सच्चे भगत थे वह परमात्मा दे ।
कुल विच थे जैरामजी कुल दीपक,
भगतां विच मुखिये परमात्मा दे ।
जगह जगह विच सब याद करदे,
जिन्द जान थे भगत महात्मा दे ॥४॥

बीर वार ते वार सन्त पुरे अन्दर,
दुमेलगंज मरदान दे विच सारे
जो जो कम कीते न कोई कर सके,
तन मन ते धन दे नाल सारे।
अन्त तक सुरती रही महात्मा में,
नाले दुनियां दे कीते हैं कम सारे।
व्यवहार परमार्थ सवार दित्ता,
यह विदित है कुल संसार सारे ॥५॥

शुकर शुकर कर दे देख साधूओं को,
मोती राम दा हुये अवतार जानो।
दोनो मूर्ति विच दुमेल दे थी,
मान संता दा उन्हा के हथ जानो।
विना जैराम तो शोभे न संगत सारी,
जिवें तारियां विच इक चन्द जाना।
जेकर काल के अगे कुछ पेश जांदी,
जान देदें न ऐसे प्यार जानो ॥६॥

छन छन छोड़ दिती कुल लाज जगदी,
साधू सेवा दे विच प्यार भारी।
कोई साक व घर न याद कीता,
सन्त दर्शन दी रही इक आश भारी

महेश मुक्ति दे विच सन्देह नाही,
साधू संगत दा फल है बहुत भारी ॥७॥

प्रभु प्रार्थना

ना कोई गर्जना थी न कोई बिजली थी,
अचन चेत ही मेरे भगवान बरसे।
बड़ी धूप ते लिशकदे तारियों में,
बिना खबर तों मेरे भगवान बरसे।
ना कोई आंधी ते न हवा ठंडी,
बिना बदलों मेरे भगवन बरसे।
होय दयाल ते दिया जगा मुझको,
सारे जगदे प्यारे भगवन बरसे।
दिये हथ ते पैर और प्राण मैनूं,
बिना मोल तों मेरे भगवान बरसे।
सुन्दर आंख ते जेहवा बोलने नूं,
बिना रिश्वत तों मेरे भगवान बरसे।
ठंडी हवा ते पानी पीवने नूं,
बिना टैक्स तों मेरे भगवान बरसे।
फुल फल :दूध दही रोटी खावने नूं,
बिना मंगियां मेरे भगवान बरसे।
ना कोई विद्या न दिमाग मेरा,

विना प्रेम से मेरे भगवान बरसे।
ना कोई नित ते ना कोई नेम मेरा,
विना भगती से मेरे भगवान बरसे।
न कोई जप ते ना कोई ध्यान मेरा,
विना दान तो मेरे भगवान बरसे।
ना कोई जात ते पांत न रूप मेरा,
विना गुणां से मेरे भगवान बरसे।
ना कोई यज्ञ ते ना कोई हवन कीता,
विना भेष तो मेरे भगवान बरसे।
ना कोई पूजा ते न कोई भजन कीता,
विना भटकियां मेरे भगवान बरसे।
ना कोई ब्रत ते ना कोई तीर्थ कीता,
बिना करनी से मेरे भगवान बरसे।
हथ जोड़ कर खड़ी दरबार अगे,
कब आके मेरे भगवान बरसे।
मैं अनाथनी नूं अज सनाथ कीता,
राधा साथ ल्याके मेरे भगवान बरसे।
रस्ते साफ कर रही मैं दिल सच्चे,
उसी रास्ते मेरे भगवान बरसे।
फूल अतर ते लाल गुलाल उड़ रहें,

मन्दिर विच मेरे भगवान वरसे।
जिस प्रेमी ने मोह त्याग कीता,
तिस प्रेमी ते मेरे भगवान वरसे।
जिस प्रेमी ने घर उजाड़ कीता,
तिस प्रेमी ते मेरे भगवान वरसे।
जिस प्रेमी ने हाल बेहाल कीता,
तिस प्रेमी ते मेरे भगवान वरसे।
अगे होय उदास जो जगत ऊपर,
तिस ऊपर ही मेरे भगवान वरसे।
मीरा बाई ते ध्रुव प्रह्लाद ऊपर,
होय मेहर ते मेरे भगवान वरसे।
गज पशू ते वेश्या नार ऊपर,
होय दयाल ते मेरे भगवान वरसे।
देख त्याग स्वामी राम तीर्थ ऊपर,
अजकल दे विच भगवान वरसे।
गुरु नानक कबीर नरसी भगत ऊपर,
होय कृपालू ते दयालू भगवान वरसे।
करूं गिनती मैं किस किस सज्जनां दी,
जिस जिस पर मेरे भगवान वरसे।
करूं क्या मैं उसतत उन भगतों की,

जिन्हां ऊपर मेरे भगवान बरसे ।
करूं पूजा मैं सच्चियां प्रेमियां दी,
जिनां उचे मेरे भगवान बरसे ।
करूं बेनती धूड़ मिले सज्जनां दी,
जिन के ऊपर मेरे भगवान बरसे ।
जिला शिमला ग्राम कुमार हट्ठी,
कृष्ण मन्दिर दे अंदर भगवान बरसे ।
इस नगरी का आज कल्याण होया,
कीर्तन मण्डली नाल भगवान बरसे ।
करूं बेनती मैं हथ जोड़ कर के,
करो मेल ते मेरे भगवान बरसे ।
कुमार हट्ठी दे विच कीर्तन मण्डली जो,
तिस ऊपर भी मेरे भगवान बर[illegible] ।
कृष्ण मन्दिर अंदर नित होय कीर्तन,
क्यों न शाम मुरारी भगवान बरसे ।
पुरुष स्त्रियां मिल मिल के रोज आवन,
करन सेवा ते फिर भगवान बरसे ।
भोले भाले पुजारी ते मेहर, करके,
राम दयाल ते महेश भगवान बरसे ।

भगवान की कृपालता

दुनिया कहती मुझ को भगवन, मैं कहता भगतों को धन धन ॥टेक
हरिनाम को प्रेम से जो जपते, मन काम लोभ से जुदा रखते।
वह हैं मालिक मैं हूं सेवक, फिर वह भगवन या मैं भगवन॥१
जो नाम तेरा नित जपते हैं, भवसागर पार उतरते हैं।
वह हैं स्वामी मैं हूँ किंकर, फिर वह भगवन या मैं भगवन ॥१
मेरी बांधी को भगत छुड़ा सकते, बांधी भगत न छुड़ाऊं किसी वकते
बिना लाज ही बांध लिया मुझको, फिर वह भगवन० ३
तन धन मन मुझ पर वार दिया, दुनियां सुख को इन्कार किया
इक प्रेम मन्त्र अख त्यार किया, फिर वह भगवन० ३
ब्रत कर्म धर्म इक को माना, मोक्षपदभी एक उसे जाना।
दिया प्रेम पाट का इमत्याना, फिर वह भगवन० ५
दिन रात न आप आराम करे, फिर मेरे पर ही बोझ परे।
अतसै मुझको बेचैन किया, फिर वह भगवन० ॥२
बन्धन के हैं जितने जी सहा, पाय समा होत उनका जी फनाह।
प्रेम पुखता जंजीर से बांध लिया, फिर वह भगवन० ७
कहत दास महेश सबको हमेश, बड़ा सख्त प्रेम का है यह देश।
धन वह ही जिसने निबाहे दिया, फिर वह भगवन० ८

भगवान की लीला

भगवान की कैसी लीला है,
कोई जाने भगत रसीला है। ॥ टेक ॥

कोई निर्धन है कोई राजा है,
बदसूरत है कोई साजा है।
हर रंग में शांम विराजा है,
रंग २ दे विच चमकीला है ॥ १ भगवान०

कोई सूखे टुकड़े खाता है,
कोई हलवा पूरी खाता है।
तेरा भेद किसे न जाता है,
रंग २ विच करता लीला है ॥ २ भगवान०

कोई निर्बल है कोई सूरा है,
कोई पंडित है कोई रूरा है।
कोई सब गुण दे विच पूरा है;
खिलारी एक रसीला है ॥ ३ भगवान०

कोई महलों में प्रकाश करे,
कोई तन विभूती संग राश करे।
कोई जंगलों में अभ्यास करे,
गेरू रंग विच वस्त्र पीला है ॥ ४ भगवान०

कोई ऐश अवाश उड़ाता है,
कोई गम के चक्कर खाता है।
कोई बिरह गीत को गाता है,
रो रो कर वस्त्र गीला करता है ॥ ५ भगवान०

कोई सिर पर छत्र झुलाता है,
कोई घर घर भीख को जाता है।
कोई भिक्षा मूल न पाता है,
सिर पीट के होता नीला है॥ ६ भगवान

कोई बन्सी खूब बजाता है,
कोई बीना तार सुनाता है।
कोई रो रो कर चिल्लाता है,
किस्मत का बहुत ही ढीला है॥ ७ भगवान

कोई मन में बैठ विचार करे,
कोई शांम सुन्दर का ध्यान धरे।
कोई धर्म युद्ध के बीच मरे,
छोड़ माल टब्बर कबीला है॥ ८ भगवा

कोई प्रेमी साथ प्यार करे,
कोई तन मन धन को वार करे।
कोई पानी को इन्कार करे,
दिल तिस का बड़ा हठीला है॥ ९ भगवान

कोई दुनिया को छड जाता है,
कोई तिस के माल को खाता है।
कोई देख देख शर्माता है,
क्यों बृथा करता हीला है॥ १० भगवान

कोई मोटा पतला लाला है,
कोई लम्बा ठिगणां बाला है।
कोई गोरा पीला काला है,
इक तेरा ही रंग रंगीला है॥ ११ भगवान०

कोई गुरु बैठ पुजाता है,
कोई चेला पास कहाता है,
कोई नीति खूब चलाता है,
महेश तेरी सब लीला है॥ १२ भगवान०

गुरु भक्ति के भजन

जी मुझे ओट केवल गुरुदेव की,
हां मुझे ओट केवल गुरुदेव की ॥टेक॥
कोई जावे मथरा कोई जावे कांशी,
कोई कर भजन खोजे अविनाशी।
विना गुरु चैन नहीं पावे जी,
कह गये व्यास वशिष्ट सुखदेव जी॥ १ हां मुझे०

कोई जप तप कर संयम नेमा,
साधन कर कोई चाहत क्षेमा।
विना गुरु मोक्ष न पावे,
जी कह गये विष्णु ब्रह्मा महादेव जी॥ २ हां मुझे०

कोई यज्ञ हवन दान बहू कर है,
तीर्थ यात्रा में बहू फिर हैं।
बिना गुरु ज्ञान नहीं पावे,
जी कह गये बाल्मीक ऋषभदेव जी ॥ ३ हां मु

कोई पूजे देवी कोई महां देवा,
कोई निर्गुण कोई सर्गुण सेवा।
बिना गुरु आत्म नहीं पावे जी,
कह गये वेदान्त में पूज गुरु देव जी ॥ ४ हां मु

तत्त्व मसि महां वाक्य के लच्च गुरु,
गुरु भगती साधन में है शुरु।
बिना गुरु भरम नहीं जावे,
महेश धर ध्यान करो गुरु सेव जी ॥ ५ हां मु

भजन (१)

यदि गुरुदेव के बचनों में, तेरा विश्वास हो जाता
तो निश्चय इस भवसागर से, तेरा उद्धार हो जाता ॥ टे

ज्ञान की रोशनी होती, दिवाली दिल की खुल जाती
जमाना पूजता सारा, गले का हार हो जाता ॥ १ यदि

न होती जन्मों की ख्वारी, न बढ़ती कर्म बिमारी
हृदय मन्दिर में आत्म का, तुझे दीदार हो जाता ॥ २ यदि

यदि गुरु भगती की माला, बड़े ही प्रेम से जपता।
तो भगतों को यह घर तेरा, हरि का द्वार हो जाता ॥ ३ यदि०
आसमां चादरां होती, जमीं का विस्तरा होता।
सभी संसार हे प्यारे, तेरा घर बार हो जाता ॥ यदि०
चढ़ाते देवता ऊपर, पुष्प चन्दन को मस्तक पर।
मनुष्य तन का कर्तव्य सारा, महेश पूरा ही हो जाता ॥ ५ यदि

भजन २

सतगुरु प्यारे नयन के तारे, मेरे तो वह महाराज हैं।
लोकी की जानन शक्ति उन्होंकी, मेरे तो सिर के ताज हैं ॥ टेक
सच्चिदानन्द है नाम उन्होंका, ब्रह्म अखंड है ध्यान उन्होंका।
सारी भूमि के साज हैं मेरे तो वह महाराज हैं॥ १ लोकी०
सोना परखिये ला कसवट्टी, संत परखिये जज्ञासू की हट्टी।
भव सागर के जहाज हैं, मेरे तो वह महाराज हैं ॥२ लोकी०
इच्छा रहित गम्भीर हैं भारी, ब्रह्म विद्या का भंडार है जारी।
बड़े गरीब निवाज़ हैं, मेरे तो वह महाराज है॥ ३ लोकी०
ब्रह्म अखंड बखानियो जोई, गुरु मूर्तिधर आयो सोई।
महेश की राखी लाज है, मेरे तो वह महाराज हैं ॥ ४लोकी०

भजन ३

जी अज मेरे सतगुरु आये, पलकों से मैं पंथ बुहारूंगी।
करूंगी प्रेम से सेवा, शीश चरणन झुकाऊंगी ॥ टेक

नैनों के बीच बिठा करके, आंसू से चरण धुलाऊंगी
चाव का चन्दन चढ़ा करके, प्रेम के पुष्प चढ़ाऊंगी ॥ १जी
ध्यान का धूप धुखा करके, जिह्वा की जोत जलाऊंगी
रागके राग गा कर के, आरती मैं सजाऊंगी ॥२ जी
भाव का भोग लगा कर के, प्रीति का पान खिलाऊंगी
जी मन का सेज बिछा कर के, बुद्धि बिस्तर लगाऊंगी ॥३ जी
अहं हृदय सुला कर के, चित्त से चरण दबाऊंगी
दसों इन्द्री के द्वारों को, बन्द कर प्रभु रिझाऊंगी ॥ ४ जी
भेद परदा उठा कर के, उन्हों के बीच समाऊंगी
महेश गुरु देव की कृपा, सफल जीवन बनाऊंगी ॥ ५ जी

भजन ४

सतगुरु शरणी प्रेम से जाया करो,
अपना जीवन सफल बनाया करो ।

आठ साधन को बताते, वेद और श्री सतगुरु,
होवेगा जब अधिकार उन का,तब सिखाते हैं गुरु।
सत गुरु बचनो को मन मैं जमाया करो ॥सतगुरु०
ब्रह्म और नेष्टी गुरु को बताते वेद हैं,
तन मन से सेवा कीजिए रखना न रंचक भेद है
संशय वृत्ति न मन विषे ल्याया करो ॥२ सत गुरु०

ब्रह्म विद्या को पढ़ो जानो गे निर्णय तब सभी,
कर्म और उपासना से ज्ञान होवे नहीं कभी।
महां वाकों को दिल में बैठाया करो ॥३ सत गुर०
माया अविद्या है उपाधि इनको छोड़ो गे जबी,
जीव और ईश्वर के अधिष्टान जानोगे जबी।
भाग त्याग यहां लक्षणा लगाया करो ॥४ सतगुर०
अवधि इसकी यही है अध्यास को ही छोड़ना,
रस्सी का जब ज्ञान होवे सर्प भ्रम को तोड़ना।
वृत्ति देह अध्यास से हटाया करो ॥५ सत गुर०
समष्टि और व्यष्टि के स्वरूप को जब जानोगे,
सर्वज्ञ और अल्पज्ञ के निर्णय को तब पहिचानोगे।
आत्म ज्ञान ववेक को पाया करो ॥६ सत गुर०
वृक्ष वृक्ष व्यष्टि हैं सब मिल बगीचा ही कहें,
बुद्धि में प्रतिबिम्ब नाना जीव संज्ञा को लहें।
समष्टि एक विराट को पाया करो॥ ७ सत गुर०
ईश और गुरु देव शास्त्र की कृपा से भान है,
आपने पुरुषार्थ की भी साथ इसके तान है।
तब दृढ़ अपरोक्ष ज्ञान पाया करो ॥८ सत गुर०
जानकर स्वरूप अपना अहलाद होवे गा बड़ा,
लोक और परलोक की लज्जा को फोड़ोगे घड़ा।
प्रारब्ध को भोग मुकाया करो ॥९ सत गुर०

संचित कर्म ज्ञानाग्नि से जलते हैं यों गीता कहे
क्रियमान बिन हंकार हैं वा बांट दुनिया ही लहे
महेश सतगुरु जी के गुण गाया करो ॥१०सतगुरु

भजन ५

सतगुरु दे द्वारे उते शीश निवांदी जावीं
माफी मिले न मिले भुल बखशांदी जावीं ॥टेक
आज्ञा नूं पालन करीं, पैर न पिछे धरीं।
सतगुरु दे बचनां उते, फूल चढ़ांदी जावीं ॥१ सतगुरु
सच नूं मूल न छडीं, झूठ नूं अन्दरों कड्ढीं।
दिल नूं साफ करके, सेव कमांदी जावीं ॥२ सतगुरु
जागन गे भाग सुते, सतगुरु सन्देशे मुते।
टबर परिवार सारा, छड के तूं छेती जावीं ॥३सतगुरु
तन ते मन धनः सतगुर तों वारी जन।
ईश्वर दा रूप जान, चरणां तों वारी जावीं ॥ ४सतगुरु
जोड़ियां दे विच महेश, खड़ी रही हमेश।
आज्ञा जो करन सतगुरु, पालन करदी जांवीं ॥ ५सतगुरु

भजन ६

मैं वारी सतगुरु देखे, परम उपकारी ॥टेक॥
सतगुरु की महिमा वेद न जाने,
मैं हां कौन विचारी ॥१ मैं०

किचतता कुछ लोभ नहीं है,
गुणां दी हैं पटियारी ॥२ मैं वारी०
जिम जाने ईश्वर के तांई,
सतगुरु को अधिक निहारी ॥ ३ मैं वारी०
तिस अधिकारी सरल पुरुष को,
वेद अर्थ उजयारी ॥४ मैं वारी०
स्वामी सच्चिदानन्द गुरु वचन दिवाकर,
करें मन को उजियारी ॥ ५ मैं वारी०
पूरे गुरु बिना पढ़े जो शास्त्र,
सागर सम है खारी ॥६ मैं वारी०
दास महेश ऐसे सतगुरु प्यारे,
चरण कमल बलिहारी ॥ ७ मैं वारी०

भजन

सतगुरु मुक्ति का रास्ता बता दो मुझे,
मुझे अपने चरणों की दासी बनालो मुझे ॥टेक॥
कहां से आया यह जीव सतगुरु,
कहां को यह जावेगा ।
बिना सतगुर यह भेद गूढ़ा,
कैसे जान यह पावे गा ।
क्या क्या साधन करना बता दो मुझे॥ १ सतगुरु०

विषयों में मैं फंस रही,
धोखा दिया है शत्रु मन ।
पांच चोर हैं लूटते, निर्मल मेरा जो आत्म धन ।
इन पांचों से सतगुरु बचालो मुझे ॥२ सत०

चोरों की रक्षा करने को,
दीजो ववेक :वैराग को ।
दीजे खज़ाना नाम का,
पाऊं अचल सुहाग को ।
पूर्ण रामके दर्शन करादो मुझे ॥ ३ सत०

ऋद्धि सिद्धि नहीं मांगती,
नहीं चाहिये कुछ धन सतगुरो ।
जिसका उजाला जगत में,
तिस को बता दो सत गुरो ।
ज़रे २ में व्यापक दिखादो मुझे ॥४ सत०

तत त्वं पद का शोधना,
निर्णय करावो हे प्रभु ।
महां वाकों द्वारा, ज्ञान
आत्म दृष्टि करा दो हे प्रभु ।
जीव ईश्वर का रूप समझा दो मुझे ॥५ सत०

है बेनती महेशकी, हथ जोड़कर ममनाथ जी।
चित जड़ की ग्रंथी टूट पड़े,
ऐसी सुनावो गाथ जी।
आवागमनसे सतगुर छुड़ा लो मुझे॥६सत०

भजन ८

हो विखारिन गुरां पास जांवागी मैं
जो जो शंके हैं दिल दे सुनांवागी मैं॥टेक
प्रेम गेरू से कपड़े रंगू मैं सइयो,
हर दम नाम गुरां जी दा ध्यावांगी मैं ॥१
हथ चिमटा उद्यम वाला लै के सइयो,
नारा कुटिया दे बुए ते लांवागी मैं ॥२
मैं विराग वैरागन को लैकर सइयो,
जाके चरणों पै सीस निवांवांगी मैं ॥३
आश्रम गुरां जी दे जा नित सेवा करूं
अपनी पलकों का झाड़ू बनांवांगी मैं ॥४
पानी भरने का करके बहाना सइयो,
जा के डेरे दी सेवा कमावांगी मैं ॥५
हथ जोड़ के सिर चरणों पै धरूं,
फिर भिक्षा दी अरज़ गुजारांगी मैं ॥६

मैं हूं पुत्री वोह मेरे हैं परम पिता,
सच्चा दर्शन उन्हों का पावांगी मैं ॥७
सतगुरु ·प्रेमी ते आत्म ज्ञानी मिले,
कर के सतसंग जन्म सुधारांगी मैं ॥८
ज्ञान भक्ति का उपदेश देते सइयो,
ऐसे सतगुरां तों बल जावांगी मैं ॥६
सतगुरु पूरे मिले महेश शान्ति पाई,
उनकी आज्ञा को सीस पै धारांगी मैं ॥१०

भजन

जी पहले रूठड़े गुरु मनालै' दुनिया फेर रख लईं।
दुनियां फेर रख लई, स्वाद फेर चख लईं ॥टेक॥
तैने इतनी उमर गवाई, दुनियां अजे हथ नहीं आईं।
तैनूं फिर भी शर्म न आई, सारी चौड़ कर लईं ॥१ पहले०
जेहड़े बहुत करें थे प्यार, वह तो घर तों काढें बाहर।
अगे किस दा हई अधार, नी कुछ मत सिख लईं ॥२ पहले०
नी कई मर गये आशा धार, फड़िया गिया न इह संसार।
धोखे वाला एह बाज़ार, तुरत रसीद कट लईं ॥३ पहले०
यह है धोखे का बाज़ार, विच्चों लुट दे उतों प्यार।
तैने रहना बहुत हुश्यार, ज़रा अखां पट लईं ॥४ पहले०

महेश सतगुरु मिलन बपारी, तैनूं युक्ति बतावन सारी।
मूड़ी पूरी कर देन सारी, जल्दी सौदा कर लईं॥५ पहले०

भजन १०

आज शुभ दिन आई घड़ी, मेरी सतगुरु बांह फड़ी ॥टेक
भव सागर अति तरन कठिन हैं, मोह के चक्कर फिरी।
लोक प्रशंसा वायु चली अति, नैया तो बीच पड़ी॥१ मेरी
दुःख समुद्र से काढ लियो मोहि, कृपा की देकर बली।
तन मन धन कर सेव न कीनी, कौन पुन्य आगे खड़ी॥ २ मेरी
ईश्वर कृपा जिस पर होवे, पूरे गुरु तिसे मिली।
होवे दयाल गुरु जब शिष्य पर, तो गुड़िया आकाश चढ़ी॥३ मेरी
शिष्य के लिये तो सतगुरु प्यारे, नारायण नर अवतरी।
युग २ भगतों की रक्षा करते, प्रेम बरसाय जिम पोह की झड़ी
॥४ मेरी
सकल आश्रय छोड़ देवे जब, गज द्रुपदा इव रक्षा करी।
दास महेश वह तो कृपा के सागर, हमारी ही त्रुटि बड़ी॥ ५ मेरी

भजन ११

लोचे गुरु दर्शन मन जो २, प्रेम की फौन दिलाया कर॥ टेक
सच्चे दिल से अपने २, आंसू प्रेम बहाया कर॥१ लोचे०
मिलना चाहे प्रभु को २, किसी का मन न दुखाया कर॥२लोचे०
मिले जो सतगुरु ज्ञानी २, तूं दिल दा भरम मिटाया कर॥३ लोचे

कर के सेवा उनकी २, सफल तूं जन्म बनाया कर॥४लोचे॰
करा देन आत्म दर्शन, वृथा न तूं घबराया कर॥५लोचे॰
कपट छल छोड़ दिल से २, सरल चित होके जाया कर॥६लोचे॰
अति कृपालू सतगुरु २, जाके अरज गुजारा कर॥७लोचे॰
देवन आज्ञा जो जो २, श्रद्धा के साथ निभाया कर॥८लोचे॰
हित उपदेश गुरु के २, महेश तूं मन चित लाया कर॥६लोचे॰

भजन १२

गुरु जी मेरे मुकट मणि, मैं सतगुरां जी दी दास
गुरु जी मेरे श्रो मनी ॥ टेक ॥
लख चौरासी बन्धन काटियो, देकर ज्ञान विचार-हरि।
मोह माया को गोरख धंधो, सुलझ गयो जिमि तार
रोशनी अजब बनी ॥ गुरु जी मेरे मुकट मणि ॥ १ ॥
तत्व मसि महावाक सुना कर, दीनों आत्म ज्ञान-हरि
ज्ञान खुमारी चढ़ गई मुझ को, कर के अमृतपान ।
दूर भयो पातसनी ॥ गुरु जी ॥ २ ॥
बन्धन की विधि सब कोई जाने, छूटे विरला कोई-हरि
जो छूटन की युक्ति जाने, सतगुरु हमरो सोई ।
ऐसो तो जन नाहे घनी ॥ गुरु जी॰ ॥३॥
जग को भूल भूलैय्या जानो, भूलियो सब संसार-हरि
बिना गुरु निकसन नहीं पावे, कर रहे सब ही पुकार।
यत्न कर हारे धनी ॥ गुरु जी॰ ॥ ४ ॥

ना बल बुद्धि विचार रंच हूँ, ना विद्या को ज्ञान-हरि
केवल सतगुरु शरण आप की, राख लियो भगवान ।
प्रेम को नातों गनी ॥ गुरु जी० ॥ ५ ॥
दास महेश कहैं सतगुरु प्यारे, करियो न सोच विचार-हरि
त्रुटि घनी नाथ है मोरी, आपे ही बखशन हार ।
आप बिना कौन तनी ॥ गुरु जी० ॥ ६ ॥

भजन १३

सतगुरु बांध लियो मैं, रक्षा बांधन आई ।
शरणी लगा लेना मैं, शोभा सुन के आई ॥ टेक
सब वृत्तियों को इकत्रित कर के, तागा एक बनाया ।
तत्त्वं पद के लक्ष अर्थ का, फुमन ऊपर लाया ।
फिर समझा देना, कहीं गलत न रक्षा बनाई ॥ १ सतगुरु०
सब देवन को देव जानकर, ओट आप की लीनी।
सब पूजा से उत्तम पूजा, सतगुरु पूजा चीनी ।
भिक्षा पा देना आप बाप ही माई ॥२ सत गुरु०
सब संगत है दास आपकी, जो जो शरणी आये।
कृपा कर के सत गुरु प्यारे, इन को दियो छुड़ाये ।
मन से हट जावे राग द्वेष की काई ॥ ३ सत गुरु०
तन मन धन कर सत गुरु देव की, सेवा कभी न कीनी ।
ना जानूं किस कारण सत गुरु, ऐसी सम्पति दीनी ।
कृपा की कर वर्षा फरक न रखते राई ॥४ सत गुरु०

वेद शास्त्र सब देखिया, गुरु बिन और न ओट ।
जन्म मरण दृढ़ करण का, काट देवें जो खोट ।
सत गुरु काट दियो मेरे जन्म मरण की शाई ॥५ सतगुरु०
मिन्ट मिन्ट पल पल विच सतगुरु, रोम रोम गुण गाऊं ।
जो सुख दियो अमोघ सतगुरु, किस मुख बोल सुनाउं ।
जानि ज्ञान प्रभु महेश सकत नहीं गाई ॥६ सत गुरु०

भजन १४

तेरी दासी रुड़दी जांदी, लादो पार सतगुर जी ॥टेक
मेरे साक सैन जो सारे, वह थे इक तो इक प्यारे ।
वह तो हो गये सब किनारे, छड विचकार सतगुर जी ॥ १तेरी०
दुखिया आजिज में तां होई, मेरा हमदर्दी न कोई ।
मैं तां इसे गले रोई, ज़ारो ज़ार सत गुरु जी ॥२ तेरी०
दिल हो गिया निमाना, रिहा कोई नहीं ठिकाना ।
मैं तां तैनूं जग बिच जाना, मददगार सतगुर जी ॥३ तेरी०
सतगुर होनगे दियाल, रखन चरणां दे नाल ।
वहे तों बड़े ही कृपालु, दीना नाथ सत गुरु जी ॥ ४ तेरी०
महेश जन्म अनेक, दिती किस ने न टेक ।
लगा दिल को यह सेक, देवो तार सत गुरु जी ॥५ तेरी०

भजन १५

जेड़ा सत्संग में नां जावे, बन्दा रज्जदा नहीं ।
बांझों सतगुरां दे कोई, पड़दा कज्जदा नहीं ॥ टेक
राग द्वेष दी सखत बिमारी, जलदी कर लौ इस दी कारी ।
बिनां सतगुर देव सिआने, रोग लगदा नहीं ॥

जाना गुरां दे दरबार, चाहे टुकड़े कर देन चार।
सानूं घर दी तरफ़ जाना सजदा नहीं ॥१ जो गुरां०
जाना सतगुरु जी दे कूये, भावें सुट देन विच खूये।
मैंनूं मूर्ख दा संग चंगा लगदा नहीं ॥२ जो गुरां०
रहना सतगुर जी दे देश, सुनना सुन्दर उपदेश।
सानूं खुश्क ज्ञान चंगा लगदा नहीं ॥३ जो गुरां०
जाइये सतगुर जी दी शरणी, आज्ञा पालन विद्या पढ़नी।
भेद वादियां दा संग, कभी फायदा नहीं ॥४ जो गुरां०
द्वारे गुरां दे महेश, हो कर रहना दरवेश।
बिना गुरु के ज्ञान कभी लभदा नहीं ॥५ जो गुरां०

भजन १६

ज्ञान होंवदा नहीं गुरु देव बिना, चाहे कितने कर्म कमावे ॥टेक
जीव मुक्त न होवे ज्ञान बिना, सब तीर्थ से फिर आवे ॥१ ज्ञान०
ज्ञान होंवदा नहीं गुरु श्रद्धा बिना, चाहे कितने यज्ञ करावे॥२ज्ञान०
श्रद्धा नहीं होवे सतसंग बिना, षट शास्त्र जो पढ़ जावे॥३ज्ञान०
जो करे सत्संग अभिमान बिना, वह जल्दी मोक्ष को पावे॥४ज्ञान०
मन शान्त न होवे वैराग बिना, कितना ही दान दिलावे॥५ज्ञान०
दुःख दूर न होवे मन शान्ति बिना, कितनी खड़ताल बजावे॥६ज्ञान०
ज्ञान सोहना नहीं लगे गुरु भक्ति बिना, चाहे सोहं सोहं गावे।
॥७ ज्ञान०

होवे मोक्ष न महेश गुरु शरण बिना, चाहे कितने देव मनावे।
॥८ ज्ञान०

भजन १७

मन की आदत को बदले सूर, जो गुरु मुख प्यारा हरि कानूर॥टेक
चोर जुआरी क्या बदलेंगे, माया को जिन्हों ने किया मन्जूर।
मोह ममता में फंस रहे हैं, सत्संग से जो रहते दूर ॥१ मन की०
भंग तमाकू हफीम नशे में, कर दिया है चकना चूर।
शुभ संगत से नफरत उनको, बांधव बीच रहें हजूर॥ २ मन की०
पंच विषयों में लम्पट रहते, मन्द बुद्धि लोभी अति क्रूर।
पांचों ठगनी घेरे तिसको, तृष्णा रहती सदा भरपूर ॥३ मन की०
उन को सुख स्वप्नेहूँ नाहीं, रहे हमेशा प्रभु से दूर।
सेवा भाव में हानि माने, अहं वृत्ति और करे गरूर ॥ ४ मनकी०
गुर मुख हो कर सेव कमावे, सब उड़ जावे दोष कपूर।
कहें महेश सुनो मन मेरे, गुरु आज्ञा हरि भजन जरूर ॥५ मनकी०

(भगवान भक्ति के भजन) १८

हरि भक्ति ववेक बिना भाती नहीं ।टेक
हरि का सिमरण जो जन करते, धार कपट पाखंड।
मुख में उसतत दिल में निंदा, मूर्ख महां प्रचण्ड।
उन्हें शान्ति ज़रा कभी आती नहीं ॥ १ हरि०
राई जितना दान करत हैं, सेर करत अभिमान।
ऊपर चढ़ के देखन लागे, कब आवे विमान।
उन्हें लज्जा ज़रा भी आती नहीं ॥ २ हरि०॥

राम कृष्ण का ध्यान भी करते, बगले जैसा ढंग।
काम क्रोध को ज़रा ना छोड़ें, सब कर्मों में भंग।
उन्हें भक्ति की चाल कभी आती नहीं ॥३ हरि०
तीर्थ यात्रा कर्म भी करते, और करें सत्संग।
मन में कुछ विचार न करते, काम करें बेढंग।
उन्हें सत्संग की चाल कभी आती नहीं ॥४ हरि०
सब लोगन में रोशन करना, चाहते अपना नाम।
ईश्वर अन्तर्यामी प्यारा, दिल की जाने राम।
उन्हें पाखंड की भगती तो भाती नहीं ॥५ हरि०
ज्ञान बिना मुक्ति नहीं, ज्ञान न बिन वैराग।
तब होवे वैराग जब, तजे जगत की राग।
बिना साधन के राग द्वेष जाती नहीं ॥६ हरि०
कर्म भक्ति और ज्ञान का, एक निशाना जान।
दर्जे पै दर्जे काम करत है, जाने चतुर सुजान।
बिना गुरु से महेश युक्ति आती नहीं ॥ ७ हरि०

भजन १६

हे दाता मुझे दान यही दीजिये,
मुख मैं भक्ति सेवा देश की कीजिये ॥टेक॥
तन मन से सेवा करूं देश की,
वर्ण आश्रम की हो वा किसी भेष की।
मेरे मन की यह आशा पुजा दीजिये ॥१ हे दाता०

हे दयालु पिता सब के रक्षक प्रभो,
शक्ति यही भरो मेरे दिल में विभो।
देश सेवा के अन्दर रला दीजिए ॥२ हे दाता०
कृपा अपनी करो जान पुत्री मुझे,
ज्ञान मार्ग का मुझ को जी रस्ता सुझे।
दान भगती का भगवन मुझे दीजिए ॥३ हे दाता०
सच्चे दिल से यह अरज करे जी महेश,
देश सेवा और भक्ति दियो जी हमेश।
ज़रे ज़रे में दर्शन करा दीजिये ॥४ हे दाता०

भजन २०

सुन लो भारत की एक पुकार मोहिना
घेरी यवनों ने आकर बेकार मोहिना ॥टेक॥
द्वापर में एक ही द्रौपदी, दुष्टों ने घेरी थी प्रभु।
करने लगे जब नगन उसको, प्रेरी माया थी प्रभु।
दुशासन थक गयो वस्त्र उतार मोहिना ॥१ सुन०
साड़ी पै साड़ी आगई, सब हार गये कौरव अबुद्ध।
नगन करना चाहते थे, धर्म की नहीं जिन को सुध।
तब तो आये थे आप कृपाल मोहिना ॥२ सुन०
अब तो टुकड़े हो रही, भारत अति दयालू जी।
अनेक नारी नगन हो रही, दया करो कृपालू जी।
बिना आप के न कोई है आधार मोहिना ॥३ सुन०

यह सत्य हमरे पापों की, गिनती नहीं भगवान जी।
भारत की जनता जान कर, कर दो प्रभु कल्याण जी।
हैं आप ही भारत के सरकार मोहिना ॥४ सुन०

धर्म की जब हानि होगी, अधर्म का प्रचार हो।
इकरार गीता में किया था, तब मेरा अवतार हो।
अब दिखा दो भारत से प्यार मोहिना ॥५ सुन०

खूनों की नदियां बह गई, रुल रहे भारत के वीर जी।
जल्दी आकर नाथ जी, हम को बंधावो धीर जी।
महेश कर रही भारत पुकार मोहिना ॥६ सुन०

भजन २१

भारत में फिर से आना, हे हिंद के सितारे ॥टेक
हम हिंद वाले सारे, प्रभु जी याद में हैं।
दिल रो रहा हमारा, सुन प्रभु जी हमारे ॥१ भारत०
भारत की नारी सारी, सब रो रहीं विचारी।
अबला जनों के तुम थे, एक मात्र ही सहारे ॥२ भारत०
दुनियां के लोग सारे हथ मल रहे प्यारे।
अनमोल रत्न हमने, हाथों से दीन हारे ॥३ भारत०
प्यारे महेश तेरे खूनों की आंसू रोते।
आकर तसल्ली देना गीता के गाने वाले ॥४ भारत०

भजन २२

भारत माता हमारी है, इसी की वीर कहायेंगी हम।
सेवा करके तन मन धन से, माता के दर्द मिटायेंगी हम ॥टे
हिन्दु से मुसलिम नहीं होंगी, धर्म अपने को नहीं खोयेंगी।
चाहे मर के मिट जायेंगी हम, भारत की वीर कहायेंगी हम ॥१॥
यद्यपि वह भाई हमारे थे, रहते हम से न्यारे थे।
विश्वास में दब गयीं थी हम, भारत की वीर कहायेंगी हम ॥२॥
भारत मां का जो बटवारा, यह हत्याचार हुआ भारा।
यह दुःख मां का न सहेंगी हम, भारत की वीर कहायेंगी हम ॥३॥
भाईयों का खून बहा करके, और पाकिस्तान बना कर के।
क्या अब भी उन की कहायेंगी हम, भारत की वीर कहायेंगी हम ॥४॥
भारत में जन्म ले करके, भारत की बहिनों सो करके।
गौरव अपना न मिटायेंगी हम, भारत की वीर कहायेंगी हम ॥५॥
उठो सारे बहन भाई, द्वैश न राखो तुम राई।
विजय फिर महेश पायेंगी हम, भारत की वीर कहायेंगी हम ॥६॥

भजन २३

हे दीन बन्धु भगवन, दर्शन दिखाते जाना।
सुन्दर और रस भरी वो, गीता सुनाते जाना ॥टेक॥
व्याकुल खड़ी है दर पै, दर्शन का दान देवो।
सखियों के प्रेम हित की, बंसी सुनाते जाना ॥१ हे दीन॥

चक्कर में आई नैया, खेवट न है यहां पर ।
विन आप के कन्हैया, न ही और कोई टिकाना॥ २ हे दीन॥
अपने ही हित के सारे, हैं कौन दुखियों का ।
गज को समय पै पहूँचे, इक शांम ही में जाना॥ ३ हे दीन॥
द्रौपदी नरसी भगत की, लज्जा रखी तिसी ने ।
अब भी नाथ तुम्हीं ने, महेश को बचाना ॥ ४ हे दीन॥

भजन २४

हे प्राण नाथ स्वामिन्, यहां कौन है हमारा ।
जल्दी से सुध लवो जी, बिना आप नहीं सहारा ॥ टेक
परिवार का क्या कहना, यह तन भी नहीं है मेरा ।
मतलब के यह हैं सारे, दुःख में करें किनारा ॥ १ हे प्राण
किराये की है यह कुटिया, चन्द दिन का है यह मेला।
आखिर प्रभु जी तुम बिन, नहीं और कोई अधारा ॥ २ हे प्राण
अस्थी है इसमें ईंटें, चर्बी लगी है गारा ।
पंच भूत का यह ढौंचा, दश इंद्रिये है द्वारा ॥ ३ हे प्राण
चौदह हैं इसमें त्रिपुटी, पचीस हैं प्रकृति ।
इक जीव का न चलता, इन साथ जंग भारा ॥ ४ हे प्राण
माया अविद्या दो से, तेरा मेरा है भेदा ।
वैसे तुम्हारा मेरा, आदि का नाते दारा ॥ ५ हे प्राण
करो सहायता मेरी, इस जंग में मुरारी ।
अर्जुन की सैना बीच, चमका था ज्यों सतारा ॥ ६ हे प्राण

माया का जाल भारा, घेरा बना रहा है।
रोकूं मैं बहुत भगवन्न, करो आप अब इशारा ॥७ हे॰
गुरुदेव की कृपा से, अविद्या तम विनाशा।
माया को आप खींचो, महेश फिर तुम्हारा ॥८ हे॰

भजन २५

कष्ट मिटा जाना, आके शाम मुरारी।
दरस दिखा जाना, संकट कटो मुरारी ॥ टेक
आवी २ देर न लावीं, दर्शन दियो शतावी।
द्रौपदी दा पक्ष प्रभु ताही कीता, लगदी आपकी भावी।
हुन क्यों लाईयां ने देर असाडी वारी ॥१ कष्ट॰
अर्जुन दा रथवाई बन्यो, सुना कर गीता आला।
तिस दा पक्ष प्रभु तांही कीता, लगदा आपदा साला।
हर वेले पांडवां दी करदे खातर दारी ॥२ कष्ट॰
देखी तेरी मैं प्रभुताई, साकां दे घर जांदे।
नामदेव दी रोटी खा के, अपना नाम वटांदे।
मतलब अपने दे पूरे कृष्ण मुरारी ॥३ कष्ट॰
करमां वाई दी खिचड़ी खाई, साग विदर घर खाया।
अपना मान घटा कर प्रभुजी, भगतां दा मान बढ़ाया।
बेर तक नहीं छोड़िया लुट लई भीलनी नारी ॥४ कष्ट॰

भगतां दी खातर इस नटवर ने सौ सौ रूप बनाये ।
नन्दा बन के दुर्योधन के प्रेम से चरण दबाये ।
लज्या नहीं कीती भगती बहुत ही प्यारी ॥५ कष्ट०
प्रह्लाद दी खातर शांम प्यारे, कीड़ी रूप बनाया ।
नरसिंह रूप धार कर प्रभुजी, हरनाकश मार मुकाया ।
हुन भी सुन लेना महेश अरज गुज़ारी ॥६ कष्ट०

भजन २६

ईश्वर जो करता क्या कर सकता कोई ।टेक
आपे सृष्टि उपांवदा, खिन में आप मिटांवद ।
जो भावे सो होई ।।ईश्वर १।।
पल में राव रंक कर साड़े, छिन में वस्ती करत उजाड़े ।
मेट न साके लोई ।।ईश्वर २।।
ईश जो कृपा जग पर कीनी, रंच न किसी ने मन में दीनी ।
अब क्यों मूर्ख रोई ।।ईश्वर३।।
जो जो जीव ने कर्म कमाये, बिन भोगे नहीं सकत मिटाये ।
कभी न सकता धोई ।।ईश्वर ४।।
प्रभु की बांधी भगत छुड़ावे, जेकर उनकी शरण में जावे ।
इस विध कर्म मिटोई ।ईश्वर ५।।
संतगुरु जब दरश दिखाये, मानो ईश रूप धर आये ।
महेश न राखे गोई ।।ईश्वर ६।।

भजन २७

मेरा मन मोह लीया हां २ तेरी इस टेढ़ी २ चाल ने ।।हां सखी हां।
चित नूं चुरा लिया हां २, तेरी इस प्रेम गिरफतार ने।।हां सखी हां।
टेक
तूं सुन सखिये परम स्यानी, भरने न दूं यमुना से पानी।
शोर क्यों मचा दीया हां २, तेरे साथ और सखी-शांमाने
।।हां सखी हां।।१
घर से तूं आई राधे दर्शकरननूं, कह रही आई मैं जल भरन नूं।
बहाना क्यों लगा लिया हां हां २, तेरी इस प्रेम भरी शान ने
।।हां सखी हां।।२
दिल भटकता था दर्शन तांई, हथ में मटकी ले कर आई।
बड़ा दुःख दे दिया हां २, तेरे इस टेढ़े ख्याल ने ।।हां सखी हां।।३
चरणां के ऊपर राधे शीश निवांवदी, मुहों नहीं बोलदी बहुत शर्मांवदी
मूंह क्यों लुका लिया हां २, चरण विच शर्म दी सार ने ।हां सखीहां।।४
गिन २ तारे सारी रात गुजारी, मुकदी नहीं ओह सी बड़ी भारी।
चिर क्यों लगा दिया हां हां, कहते हैं महेश शांम सामने।
।।हां सखी हां।। ५

भजन २८

शांम तेरी जमना दा अमृत वरगा पानी।
पानी पिला जा शामां, गऊंआं फिरन तिहाईयां ।।टेक
जमना किनारे शांम खलोता, वंसी पिया वजावे ।

मोर मुकट मथे तिलक विराजे, मिठी मिठी तान सुनावे।
बंसी में बुलाईयां गोपिया, कृष्ण दियां चतुराईयां ॥ १ पानी०
हथ खूंटी मोढ़े काली कमलिया, गऊंआ पिया चरावे।
इह तेरी सूरत शाम प्यारे, मन भगतां दे भावे।
इहो असी ध्यान मंगदी, देदे बृज दिया साईयां ॥२ पानी०
बरसाने से सखियां आईयां, संग बृखभान दी जाई।
हथ विच मटकी दूध दी मन कृष्ण दे भाई।
जी दूध दा बहाना करके, शाम मिलन को आईयां ॥३॥पानी०
दूध न विकिया दही न विकिया, उत्तों पईयां शामां।
मुड़ घर कैसे जावां सखियो, मिले नहीं घ
होके निरास सखियां, जमना दे वल आईयां ॥ ४ पानी०
ना कोई वेड़ी और मल्लाह, कित वल नूं हुन जाइये।
बोली राधा एक सखी नूं, वेड़ी ढूंढ लै आइये।
गोपियां इखठियां हो, वेड़ी देखन नूं आईयां ।५ पानी०
रो रो कर जद देखिया, बेड़ी नजर इक आई।
हथ जोड़ कर बिनती कीती, बेड़ी नूं लै आई।
याद कर शाम प्यारे नूं, दिल विच बहू घबराईयां ॥६ पानी०
सच्ची प्रीति देख राधे दी, बने मल्लाह बनवारी।
लै नौका गोपियां वल आये, राधे अरज गुजारी।
पार लंघा दे अड़िया, दूर देश तों आईयां ॥ ७ पानी०

व्याकुल देख के राधे प्यारी, हस पै कृष्ण मुरारी।
होर सखियां नूं नहीं चढ़ादे, राधे चढ़ जाय प्यारी।
सुन के गल शाम दो, रुस गईयां गोपियां सारियां ॥७ पानी०
नाल गुस्से दे बोली राधे, इकली चढ़ना नाहीं।
जिनियां असीं खलोतियां, सभनूं पार लंघाई।
छोड़ के न जावां इनानूं, इकठियां घरां से आईयां ६ पानी०
मटकियां दे विच भार है बहुता, नाव मेरी पई डोले।
दूध दही कुछ मैंनूं खिला दो, शांम सुन्दर यो बोले।
तां करां पार सखियो, रंच न लावां देरियां ॥१० पानी०
दूध दही शांम को देकर, तन मन सखियां घोले।
लेकर प्रेम किराया शाम ने, नाव चलाई झोले।
अब मैं खुश सखियो पार लघावां सारियां ॥११ पानी०
पापां नाल भरियां शांमा, आपे पार लंघाई।
औगन हारियां दे औगण बखशीं, कीती न नेक कमाई।
चरणां ते पईयां सारियां, महेश आईयां जो नारियां ॥१२पानी०

भजन २६

पहले रुठड़ा शांम मनालै, चरखा फेर कत लईं।
चरखा फेर कत लईं नी पूनियां फेर वट्ट लईं ॥ टेक
तैंने रूईं पिंजन पाई, याद न कीता कृष्ण कन्हाई।
फिर मानुष जन्म गंवाई, तैनूं मिलिया किस लईं ॥१ पहले०

तैने चरखे तंद जद पाई, निंद्या कीतिये पराई ।
सारी आयु इवें गवाई, वृत्ति अन्दर कर लई ॥२ पहले०
तैने लाई इको छली, अगे जासें इक इकली ।
तेरे संग न कोई चली, नी कोई संग कर लई ॥६ पहले०
संग धर्म ही इक जावे, सोई तैनूं पार लंघावे ।
वही ईश्वर दर्श करावे, धर्म नूं पल्ले बन लई ॥ ४ पहले०
बहिनो दिल में करो विचार, मानुष जन्म न देवो हार ।
कर लो आत्म दा विचार, महेश सतगुर से मत लई ॥ ५ पहले २

भजन ३०

जी धरो विश्वास मिलेंगे राम, मिलेंगे राम मिलेंगे राधे शाम ।टेक
धन्ने भगत ने ठाकुर मांगे, गुरु त्रिलोचन पास
त्रिलोचन पंसेरी दिती, यह ठाकुर हैं खास ।
धन्ना पूछे ठाकुर जी की, किस विध सेवा कीजे ।
सतगुर बोले धूप दे कर, पीछे भोग लगीजे ।जी० १
जंगल में कम्बल बिछा कर, गोबर धूप धुखाया ।
रोटी लेकर मक्की दी, साग ऊपर चा पाया ।
भोग लगावो ठाकुर प्यारे, धन्ने भक्त सुनाया ।
क्यों नहीं खाते ठाकुर जी, मैं लस्सी भी साथ लिआया ॥२ जी०
माखन मिशरी प्रेम से खाते, सूखा भोजन नहीं भाया ।
चार दिवस धन्ने भगत ने, अन्न जल मूल न खाया ।
पहिले ठाकुर भोग लगाते, गुरु ने यह बतलाया ।

बिना खिलाय जो रोटी खाऊं, गुरु विमुख कहलाया।
देख प्रेम विश्वास धन्ने का, प्रगट हुए यदुराया।
पत्थर से प्रगटे नारायण, देख धन्ना मुसकाया।
दोनों मिलकर भोजन पावें, आनन्द बहुत ही आया।
प्रेम २ से बातें करते, हर्ष न जाय समाया ॥ जी० ४
कहो प्रीतम कोई काम मुझे भी, धन्ने को शाम ने गाया।
धन्ने इशारा गऊंवां वल कीता, शाम के मन में भाया।
एक दिन गुरुदेव मिले जब धन्ने किया प्रणाम।
धन धन गुरुदेव प्यारे, दीयो ठाकुर मोहि शाम ॥ जी० ५
मेरे ठाकुर अब बड़े हुए हैं, गऊंवे रोज चरावे।
मोटी रोटी मक्की दी, साग लस्सी से खावे ॥ जी० ६
आपतो माखन मिशरी का, नित उनको भोग लगाओ।
इस कर ठाकुर छोटे छोटे, काम न कोई कराओ ॥ जी० ७
सुन त्रिलोचन बात धन्ने की, मन में किया विचार।
इस में कुछ आश्चर्य नहीं प्रभु, है विश्वास अधार ॥ जी० ८
त्रिलोचन धन्ने दी चरनी, अपना सीस निवावे।
तब मानूंगा धन्ने बेटा, जो मुझ को दर्श करावे ॥ जी० ९
धन्ने पुकारा ठाकुर जी, मेरे गुरु को दर्श दिखाना।
नहीं तो मुझ को झूठा कहेंगे, मूर्ख करे बहाना ॥ जी० १०
चिन्न चरण के धरती ऊपर, त्रिलोचन जब देखे।

धन्न कहें धन्ने भगत को, तेरा जन्म हैं लेखे ॥ जी० ११
बिना विश्वास राम नहीं मिलदा, गुरु होवे वा चेला ।
दास महेश करो विश्वास, जो प्रभु से चाहते मेला ॥जी० १२

भजन ३१

होवे दुखियारा मन जो २, धुनी हरि ओं की लाया कर ।टेक।
सत्संग अन्दर प्यारी २, कपट छल छोड़ के जाया कर ॥१॥
हरि के आगे हथ जोड़ २, मन में ध्यान लगाया कर ॥२॥
गोबिन्द गोबिन्द रसना २, सुबे वा शाम तू गाया कर ॥६॥
सीता राम सभ कों २, जान प्रणाम करिया कर ॥४
सच्चे दिल से अपने २, देस की सेव कमाया कर ॥५॥
नेकी उपकार प्यारी २, सीस के साथ निभाया कर ॥६॥
इह जग स्वप्ना भैना २, धोखे बीच न आया कर ॥७॥
माया जाल झूठा २, देख कर न भरमाया कर ॥८॥
कर्मों के भोग दुःख सुख २, समय पर नां घबराया कर ॥९॥
करे जो बुराई तुम से २, महेश न मन में लाया कर ॥१०॥

भजन ३२

अब न मिटेगी राम धुन लागी२, राम धुन लागी गुपाल धुन लागी
॥अब न०

मीरां को लागी द्रौपदी को लागी ।
धोय जन्म २ के दाग जी ।अब न०
राधा को लागी सखियों को लागी ।
सुनकर बंसरी का राग जी ।१अब न०

ध्रुव जी को लागी प्रह्लाद जी को लागी।
धन्ने ने खिलाया जब साग-जी। ६ अब न०
युग २ भगत हुए नरसी से।
सब को दियो अनुराग जी ।४ अब न०
सब भगतन की रज सिर धर कर।
महेश जागेंगे जब भाग जी ।५ अब न०

भजन ३३

श्री राम दीन बन्धु, संसार के रचैया।
हे राम जल्दी आवो, मझधार में है नैय्या ।टेक
प्रभु बिन कोई हमारा रक्षक नहीं यहां पर।
ढूंढा जहान सारा, तुमसा नहीं खवैया ।श्री० १
दुनियां को खूब देखा, आंखें पसार कर के।
साथी नहीं हमारा मां बाप और भैय्या ।श्री० २
सुख के सभी हैं साथी, दुनिया के लोग सारे।
इक आप ही हमारे, दुःख दर्द से बचैया ।श्री० ३
दुनिया में दिल लगाकर, हासल हुआ न कुछ भी।
बिन आप के हमारा, कोई और नहीं सुनैया ।श्री० ४
चारों तरफ ही हम पै, गम की घटा है छाई।
सुखों का करो उजारा, प्रकाश के करैया ।श्री० ५
अच्छी बुरी हूँ जैसी, तेरी ही राम हूँ मैं।

महेश है तुम्हारी, सुध लो सुध लिवैया । श्री०६

भजन ३४

राधे गोविन्द भजो राधे गोपाल ।
राधे गोविन्द भजो राधे गोपाल । टेक
विषयां विकारां तो अक्या न तूं, कर २ के पाप मना थक्यां न तूं।
कौडी दे बदले न हीरे नूं गाल ।राधे। १
करता फिरें नित मेरा ही मेरा, भुल्या फिरें पागल कुछ नहीं तेरा ।
माया पती का है माया का जाल ।राधे।२
मानुष चोला न मिला इसलिए, खाने कमाने सोने के लिए ।
करलो भक्ति हो जाओ निहाल ।राधे।३
धोखे की टट्टी है संसार सारा, ठगों का साथ यह परिवार भारा ।
इन की मोहबत है धोखे का जाल ।राधे।४
रिश्ते व नाते छड संसार के, गुण गा ले राम पालन हार के ।
दुनियां से तरणे का रस्ता निकाल ।राधे।५
दुनियां से जब तूं जुदा होयेंगा, मल २ के अखियां पिया रोयेंगा ।
धंदियों के विच महेश जिंदगी न गाल ।राधे।६

भजन ३५

विना तेरे कोई नहीं प्राणियों में
प्रभो चमकता है तूं ही ज्ञानियों में ।टेक।
है तेरी ही महिमा सूरज चन्द मांहीं ।

तूं ही गूंजता है रात कालियों में ।विना० ।१।
है जाग्रत स्वप्न मांहीं तेरा नज़ारा ।
तूं ही बोलता है बैठ सारियों में । बिना० ।२।
है तुरिया सुष्पति के अन्दर भी तूं हीं ।
तूं ही ज्ञान दीपक भरा ज्ञानियों में ।बिना०।३।
तेरी महिमा जल थल में है जी समाई ।
तूं ही दमकता है उजियारियों में । बिना० ।४।
है सत्ता सफुर्ती तेरी जग के मांही ।
तूं ही धौला पीला और कालियों में । बिना० ।५।
महेश कहे गुण कहूँ किस तरह से ।
तूं ही चमकता है बैठ सारियों में । विना० ।६

भजन ३६

हौली २ टुर चल मेरी प्यारी संगते ।
मुंहों राधे शांम बोलदी तूं चल संगते ।।टेक।।
दिन अष्टमी दा आया, उत्साह मन छाया ।
नन्द बाबे दे द्वारे टुर चल संगते । हौली० ।।१।।
सखियां थाल सजाय, द्वारे नन्द जी दे आय ।
मंगल गीत नूं गाय, तूं भी चल संगते ।हौली ।।२।।
शांम हुए अवतार, देवकी कीते नी दीदार ।
करदे भगतां नूं पार, तूं भी चल संगते ।हौली०।।३।।

वसुदेव टोकरे में पाय, जमना विचों आन लंघाय।
शांम चरन छुआय, हो गये पार संगते।हौली० ॥४॥
जमना उछल २ आई, चरण पाके देय वधाई।
चिर जुग जीवे कृष्ण कन्हाई, कैंहदी चल संगते॥ हौली॥५॥
यशोधा खबर न पाई, आगये कृष्ण कन्हाई।
दुनियां दर्शन नूं चल आई, तू भी चल संगते।हौली० ६
भोले महेश दर्शन नूं आये, देखके शांम मन हर्षाय।
कर परिक्रमा शीश निवाय, गये सिधार संगते हौली०॥७॥

भजन ३७

किसी ज़माने वसिष्ट ज्ञानी ब्रह्म विद्या सुनावते थे।
थे राम श्रद्धालु सारंग पाणि वह, सुन २ चित्त में दृढ़ावते थे।टेक
गुफा वसिष्ट अति पुरानी, भरे तलाब हैं गर्म पानी।
अश्चर्य रचना न जाय जानी, जाते ही चित जुड़ावते थे।किसी० १
किये मैं दर्शन गुरु वसिष्ट, ब्रह्म विद्या के जो वरिष्ट।
हो गये शान्त बड़े पापिष्ट, जो २ दर्शन पावते थे।किसी० २
है तप का बल भी अभी विख्यात, गुफा में जाते चित होवे शान्त।
नाश होती है दिल की भ्रान्त जो गुरु चरण मन लगावते थे।किसी०
गुफा की महिमा न वरणी जाय, दशो दिशा में शान्ति दर्शाय।
लाय जो ध्यान परम गति पाय, यह वृद्ध लोग बतावते थे।किसी०
गोतम ऋषि का आश्रम पास, देवो देवतों का है निवास।
श्री राम चन्द्र करें प्रकाश, गुरु भक्ति दिखलावते थे।किसी०।

तेज पुंज वसिष्ट ज्ञानी, दिव्य मूर्ति है अति पुरानी।
दर्श कर नयन श्रवता पानी, देख २ रिझावते थे। किसी०।६।
उमगता था अति हुलास, शिष्य गुरु का प्रेम प्रकाश।
भगतराज वा काकी पास, यह भी अर्ज गुजारते थे। किसी०।७
देवो २ गुरु भगती दान, बच्चे आपके हैं अनजान।
दयालू भगवान होवे मेहरबान, आवे जो शरणीं तरावते थे।किसी०८
महेश रो रो कर होई हैरान, गुरु भगती जिसके हैं प्राण।
पलकें खड़ गई करके ध्यान, ब्रह्मानन्द दिखावते थे।किसी०।६।
अडम्बा देवी संगत सारी, कुशल देई धनवंत प्यारी।
देवी माता की रचना न्यारी, सुन्दर दर्शन भावते थे।किसी०।१०
ऊंचे भौना अडम्बा देवी, ऋषि मुनि सिद्ध करते सेवी।
प्रत्यच्च महिमा महेश देवी, यह पंडित लोग पुकारते थे।किसी०।११
कुल्लू पहाड़ी बिजली महादेव, पड़त बिजली बताते भेव।
कुवारी कन्या करतीं सेव, शिवलिंग पूरा दिखावते थे।किसी०।१२

भजन ३८

मनीकर्ण मेरे मन वस गयो जी, मुझे रास्ता प्रीतम का दस गयो जी।।टेक।।

गर्म फुवारे अनेक उठते, शीतल गंग के पास जी।
शिवजी विष्णु मिलगये, तीजी ब्रह्म गंग प्रकाश जी।
तीनों देव तीनों गुण दस गयो जी।।मनीकर्ण।।१।।

रोटी व आलू दाल चावल. यात्री पकाते आन के।
ग्राम वासी ना अग्नि जालें, करते रसोई आन के।
युक्ति सीखी पुरवासियों को दस गयो जी ।।मनीकर्ण।।२।।
मनी नाम है मणि का, और कर्ण नाम है कान का ।
उमा भवानी का कर्न भूषण, गिरा था वह शान का ।
महादेव के गण नीचे धस गयो जी ।।मनीकर्ण।।३।।
क्रोधित हुए त्रयनयन जब, फैंका फुआरा नाग ने ।
फट गई पृथ्वी तभी, जल उच्छाला आग ने ।
शेष मणियां ही मणियां सुट गयो जी ।।मनीकर्ण।।४।।
श्राप दीया शिव भोले, पत्थर तुम बन जाओ सब ।
कलयुग में लोभी बहुत होंगे, करेंगे हर तरे दम्भ ।
यह रचना दुनिया को दस गयो जी ।।मनीकर्ण।।५।।
ऐसी अनेक वृत्तियां, उठती हैं अन्तःकरण में ।
सतो रजो तमो तीनो, फैल रही हैं धरण में ।
गंगा सतो दोनो मध्य धस गयो जी ।।मनीकर्ण।।६
भगत राज और काकी देवी, कौशल देवी साथ जी ।
तीनो मिलकर भक्ति मांगें, शिव उमा के पास जी ।
ऐसा रूप मेरे मन वस गयो जी ।। मनीकर्ण।।७।।
काम क्रोध और ईर्षा, दब जाय कृपा आपकी ।
शीतल सतोगुण गंग की, हो लहर वगदी जापकी ।
समाधी अपनी का रंग, कुछ दस गयो जी ।।मनीकर्ण।।८

महेश नाम की लज्जिया, रख लो मेरे भगवान जी ।
हो आत्मा के आत्मा, और प्राणों के भी प्राण जी ।
अपने पास ही मेरा डेरा रख दियो जी ।।मनीकर्ण।।६।।
चाहता नहीं इक पल मेरा मन, मनीकर्ण को छोड़ना ।
इस्थित हुआ यहां आनकर, छुट गिया इसका दौड़ना ।
महेश समाधी के बीच ही रच गयो जी ।।मनीकर्ण।।१०।।

भजन ३६

जी शोभा देखी अद्भुत रवाल सर की ।
जी पुपकर राज सम, नेत्र माता घर की ।।टेक।।
लोमश ऋषि तपस्या करते, गुफा महान पहाड़ ।
नीचे उतरे जल पीने को, सुन्दर देखी वाड़ ।
जी महिमा वरणी न जाय, कमल थे बहुत सुहाय ।
महेश उमा के घर की ।।जी शोभा।।१।।
जलपीकर ऋषि जी बैठे, लगी समाधी अपार ।
दृश्य हुआ उनको अपूर्व, शिवां ने करी पुकार ।
बैठिए ऋषि महाराज, पूर्ण हो तेरे काज ।
खबर पड़ेगी प्रभु दर की ।।२।। जी शोभा
महां देव और पारवती जी, सर में तरते आये ।
लोमश ऋषि प्रसन्न हुए, जै जै कार बुलाए ।
ऐसे ही खेलो प्यारे, मेरे नयनों के तारे ।

आस पूरो मुझ नर की ॥३॥ जी शोभा
होय प्रसन्न बोले शिव शंकर, जिम इच्छा तिम होई।
वर मांगो मन भावन अपनो कीयो प्रसन्न है मोई ।
ऋषि जी क्या तुम चहो, तुरत मेरे को कहो ।
बानी हुई शंकर की ॥४॥ जी शोभा
बोले ऋषि हे दयालू भगवन, मुझे तरालो संग ।
ऐसी कृपा करो मुझ ऊपर, भजन में पड़े भंग ।
यही वर दीजो स्वामी, मेरे तुम अन्तरयामी ।
करे जो स्नान तरे नर की ॥५॥ जी शोभा
सर नाम तलाव का, धृड़ी को कहें ग्वाल ।
शंकर की धृड़ी को लेकर, जो जन लावे भाल।
तरे भव सागर माहिं, इसी में संशय नाहिं।
शंका न रंच तरन की ।जी शोभा।६।
विद्धि पूर्वक जो जन वहां पर, करते जा स्नान।
अन्न धन जो गऊ माता का, करते प्रेम से दान।
बात न बृथा जावे, अनन्त कोटि फल पावे।
यह महिमा ग्वाल सर की। जी शोभा।७।
एक समय लोमश ऋषि जी, पूजा करते थल में।
नल नील दो बानर आए, ठाकर फैंके जल में।
ऋषि जी हुए उदास, आओ न मेरे पास ।
श्राप दिया मन सर के। जी शोभा।८।

कई दिन ठाकुर खोज २ कर, दुःखी हुए मन माहिं।
हाथ तुम्हारे पत्थर जो लागे, जल में डूबे नाहिं।
होवे नहीं तुमको दुःख, वानरो मानो सुख।
क्रोध न करू ं दिल धड़की। जी शोभा। ९।
ऋषि शाप तो वर सम हो गयो, राम को हुआ आराम।
नल नील दोनों ने जाकर, पुल को कीनो काम।
रामेश्वर थाप्यो जब ही, सेतू को बांधा तब ही।
लेने को पुत्री जनक की। जी शोभा। १०।
रवाल सर ऊपर सप्त सरोवर, पांच पांडव की रचना।
इक द्रौपदी इक कुन्ती माता, सातों के हैं बचना।
करे जो यहां स्नान, बैठ कर करे जो ध्यान।
विपत्ता कटे हम सर की। जी शोभा। ११।
सप्त सरोवर है इक देवी, बड़ी प्रसिद्ध महान।
जाकर पांडव सब तप करहैं, मिले थे श्री भगवान।
बात नहीं विर्थी जावे, ऋषि की पदवी पावे।
लोमश ऋषि जीक ह गये कबकी। जी शोभा। १२।
कलगीधर गुरु गोबिन्द सिंह जी, जान उत्तम इस्थान।
जाकर वहां तपस्या कीनी, लायो सुन्दर निशान।
सिखों को यह फरमाया, रहो यहां व्यापे न माया।
जब जंग होवे युग कल की। जी शोभा। १३।

अवण नाथ का उसी तालाब में, अभी निशान दिखाई।
जिस २ वहां तपस्या कीनी, उसी ने पदवी पाई।
मंडी के जो महाराजा, प्रबन्ध सब उन्होंने साजा।
सेवा करे तिस सर की। जी शोभा।१४।
लाम्बे लोग बड़े श्रद्धालू, पूजा करते भारी।
अखंड ज्योति घी सुचे की, चौबीस घंटे जारी।
करें परिक्रमा सारे, नाम को जपते भारे।
कलू में महिमा रवाल सर की। जी शोभा।१५।
दास महेश वर्णन नहीं साके, शान्त मयी इस्थान।
भगत राज और काकी देवी, हुए देख हैरान।
बेड़े जब तरते आवें, महिमा अपनी दिखलावें।
बूटे बेला साथ जड़की। जी शोभा। १६।

भजन ४०

उमा महेश्वर कैलाश वासी, अमर नाथ सजावते हैं।
श्री अमरनाथ की शोभा अद्भुत, वह जंगल मन को लुभाते हैं।टेक
गुफा में बर्फ की है जलैरी, दर्श देते हैं त्रिपुर वैरी।
धूना साहिब की खान गहरी, शिखर पर गंग बहावते हैं।उमा १
वह अमरनाथ गुफा महान, शिव शंकर जहां करते ध्यान।
हिमाचल कुमारी को देते ज्ञान, तब पंछी सुन कर हुंकारते हैं।२
अमर कथा सारी सुनाई, दक्ष पुत्री न मनते लाई।
नींद बीच रही ऊंघाई, उमा महेश्वर पुकारते हैं।उमा ३

शिवां ने देखा सोई भवानी, सुनी है किसने यह ज्ञान कहानी।
अमर हो गए वह तो प्राणी, जीवन मुक्त कहावते हैं।।उमा।।४
श्रद्धा पूर्वक जो अब भी जाते, विहंगम जोड़ी के दर्श पाते।
गुफा से उड़ते आते जाते, दर्श अपना दिखावते थे।।उमा।।५
भैरों घाटी की सख्त चढ़ाई, चढ़ते चढ़ते पुकारे माई।
शिव उमा के जो गुण को गाई, वह शीघ्र पार लगावते हैं।।उमा।।६
नदी वैतरणी पवित्र जान, देते पित्तरों को पिण्ड दान।
सच्चे दिल से जो करता ध्यान, पितृ बैंकुंठ सिधावते हैं।।उमा।।७
सुन्दर चट्टी इक है फुलवाड़ी, यात्रू टिकते हैं संग लाड़ी।
बाज़ार लगता है खूब गाड़ी, एक रात गुज़ारते हैं।।उमा।।८
शेषनाग है चट्टी भारी, स्नान करते सभी नर नारी।
रोग शोक को दे बिसारी, यह वृद्ध लोग सुनावते हैं।।उमा।।९
मटन साहब तीर्थ महान, तालाब भारी करें स्नान।
महान चेत्र कहें बुद्धिमान, वहां सूर्य दर्श दिखावते हैं।।उमा१०
श्री नगर नगरी है कश्मीर, चारों ओर सुहावन नीर।
आते जाते यात्रु की भीर, महेश सभी सुख पावते हैं।।उमा११

भजनन ४१

जै श्री उतर कांशी की, जी ऋषी मुनि जहां रहते।।टेक
है बनारस कांशी जी, यू० पी में प्रधान।
विद्यावान रहते बड़े, सब की पूज्य महान। जै०।१।
उत्तर वाहिन श्री गंगा का, अधिक पुन्य प्रताप।
वाराणिस के साथ मिल, तारिक मंत्र का जाप। जै०।२।

तिस कांशी के चिन्ह सब, उत्तर कांशी के मांहि।
कल युग में प्रधान यह, ऋषि मुनि सब गाहिं। जै० ।३।
बड़े २ विरक्त सब, जान मुक्ति का धाम ।
राज भोग को छोड़कर, पावें यहां विश्राम। जै० ।४।
जन्म मरण दुःख दूर कर, भोग मोक्ष वरदान।
आन जीव की क्या कथा, ज्ञान वानों के प्राण। जै० ।५।
कांशी बनारस से अधिक, उत्तर कांशी प्रताप ।
मरत स्वर्ग और मोक्ष पद, जीवित मिटे सन्ताप । जै० ।६।
विश्वानाथ महां शक्ति का, पूजन करें सप्रेम।
तीर्थ यात्रा सफल है, सदा कुशल और क्षेम। जै० ।७!
उत्तर कांशी की महिमा, मोह पै कही न जाय।
ब्रह्म ऋषियों का वास जहां, भोग मोक्ष वर दाय। जै० ।८।
ऐसी गंगा संगम विषे, करें हैं जो इस्नान ।
लाखेश्वर का दर्श कर, पावे पद निर्वाण । जै० ।९।
ब्रह्म कुण्ड में स्नान कर, किंचित करे जो ध्यान।
फल अश्वमेध गो दान का, पित्तृयों का कल्याण। जै० ।१०
रुद्रकुंड शिव रूप है, शिवहिं मिलावे तुरत ।
सर्व वासना दूर कर, शिव निरंध्र में सुरत। जै० । ११।
मनीकरण के घाट पर, पिंड दान जो कीन।
अमोघ बाण सम पहुंचते, पित्तृ लोक को चीन। जै० ।१२।

काली कमली वाले का, यज्ञ महां प्रधान ।
अन्न वस्त्र स्थान पुनि, दरी दीपक का दान । जै० ।१३।
श्री शंकरानन्द महन्त जी, अति निर्माण स्वरूप ।
सम दृष्टि निर्छल हृदय, इक सम रंक और भूप । जै० ।१४।
भगत २ दोनों मिले, अधिक प्रेम उत्साव ।
सोना राम अमीर चन्द, निर्छल स्वच्छ स्वभाव । जै० ।१५।
मीरां बाई और लछमी, राज कुशल्या साथ ।
चले महेश्वरी साथ सब, उत्तर कांशी के पाथ । जै० ।१६।

भजन ४२

श्री माता दर तेरे ते आके, आपका दर्शन पाया है ।
करके दर्शन जमना मैय्या, अपना भरम मिटाया है ॥ टेक
शिखर पर बर्फ का नज़ारा जिससे आई जमना धारा ।
तेरे दर्शन तो बलिहारां, शामको बीच खिलाया है ।।श्रीमा० १
पास ही तपत कुण्ड नज़ारा देख के लगा बहुत प्यारा ।
जमना मुख विच उच्छले धारा, माता तेरी माया है ।श्रीमा० २
सूर्य कुण्ड महां प्रतापी, सब का दूर करा संतापी ।
दर्शन करे जो पुनी पापी, सब का दुःख मिटाया है ।।श्रीमा० ३
आलू फुलका चावल दाल, पक दे तप्त कुण्ड दे नाल ।
खाकर यात्रु हुए निहाल, मन में हर्ष बढ़ाया है।।श्रीमा० ४
गंगा जमना मूर्ति दोई, दे कर दर्शन सब को मोई ।
महिमा त्रयलोकी में होई, तेरा अन्त न पाया है।।श्रीमा०

चट्टी चट्टी मिले आराम, कमली वाले का है धाम ।
यात्रु करते सब विश्राम, बड़ा आराम बनाया है।।श्रीमा
भैरो चट्टी सखत चढ़ाई, चढ़ते समय पुकारे माई ।
माता जमना पार लंघाई, सबने दर्शन पाया है।।श्रीमा०
संगत छिनकारी दी आई, भगत अमीर चन्द सहाई ।
दीना नाथ दी नाल है माई, बड़ा प्रेम बढ़ाया है।।श्रीमा०
सोना राम भगत है जोई, श्रद्धा अधिक उन्हों की होई ।
महेश्वरी हाथ जोड़ खलोई, कुशल्या ने ध्यान लगायाहै ।।श्रीम

भजन ४३

जै श्री गंगोत्तरी मय्या की, मिलकर सब बोलो ।। टेक
कैसा अजब नज़ाराई, भारत वर्ष मय्या ।
पुन्नी पापी नूं तारा ई ।।१।। जै०
हिमालयापव्वर्त में श्री गो मुख से निकली ।
यह गंगा धारा ई ।।२।। जै०
शिव जटा मरोड़ी जी, राजा भगीरथ संग ।
श्री गंगा टोरी जी ।।३।। जै०
राजे मन्दिर बनाया जी, गंगोत्तरी थान मैय्या ।
लोक दर्शन नूं आया ई ।।४।। जै०
हाथ जोड़ के आगे खड़े, श्री गंगे शर्ण सभे ।
ब्रह्मादि देव बड़े ।।५।। जै०
तपस्वी तप करते, मौन को धर करके ।

शीत उष्ण से नहीं डरते ॥६॥ जै०
तन वस्त्र नहीं धरते, भिक्षा अन्न लेकर ।
क्षुधा को बन्द करके ॥७॥ जै०
बड़ा धर्म कमाया ई, कमली वाले ने ।
अन्न क्षेत्र लाया ई ॥८॥ जै०
यह सुन्दर नज़ारा जी, दूध के सम बहती ।
श्री गंगा की धारा जी ॥९॥ जै०
महेश्वरी बलिहारी, कुशल्या भगत जी सब ।
और संगत छिनकारी ॥१०॥ जै०

भजन ४४

मेरा मन मोह लिया हां, मेरा मन मोह लिया
शोभा किदार नाथ स्वामी की -जी-प्रभु जी ।
दिल को लुभा लिया हां, २
रचना अमोलक किदार की, जी प्रभु जी । टेक
धन धन पांचो पांडव भाई, धन है कुन्ती उनकी माई ।
निशान ही लगा दिया, भोले नाथ शंकर नूं रिझायके -जी॥१॥
शिव शंकर हैं भोले भाले, वर देवन को बड़े कृपाले ।
जल्दी ही मना लिया, प्रेम वाली डोरी को पायके -जी ॥२॥
सिर पर सोहणा छत्र विराजे, मन्दिर अलौकिक पिण्डी पई साजे ।
चित कों चुरा लिया, सुन्दर हिमालय की शानने जी प्रभु -जी ॥३

मन नहीं चाहता यहां से जाऊं, हिमालया में रह कर गल जाउं ।
संगत ने घेरा पा लिया, खींच ले आय जिवें बालके-जी प्रभु ।।४।।
पंडित तुलसी दास सुशील, करते नहीं किससे अपील ।
निरिच्छत अमान हैं, ब्राह्मणों के धर्म को जानके -जी ।।५।।
अमर नाथ है उनका बेटा, शान्ति स्वरूप विरक्त नेष्टा ।
सेवा के स्वरूप हैं, यात्रुओं की रक्षा प्रधान के-जी ।।६।।
अमीर चन्द भगत सोना राम जी, मीरां बाई इक कौशल्य नाम ।
महेश को बुला लिया, लै आय अर्ज़ गुज़ार के -जी ।।७।।

भजन ४५

ज़ै होवे बद्री नाथ, सदा तेरी जै होवे । टेक
सुन २ सिफ़तां प्रभु जी तेरी, आशा लग रही दर्शन केरी ।
पहुंचे तेरे द्वार ।।१।। सदा
ऊंचे पर्वत धाम तुम्हारा, मोहित किया है सब संसारा ।
कटते पापों का भार ।।२।। सदा
हीरा मोती मुकुट जड़ाऊं, सिंहासन पर बैठे राऊ ।
अलौकिक मूर्तिधार ।।३।। सदा
नर नारायण दाहीं बाहीं, लक्ष्मी माता बाहर बैठाहीं ।
महिमा अपर अपार ।।४।। सदा
वाहिन गरुड़ खड़े हाथ जोड़ी, सेवा करते दौड़ो दौड़ी ।
आज्ञा पालन हार ।।५।। सदा

बाल रूप पद्मासन बांधे, जीत इन्द्रिय मन को साधे।
तपस्वी रूप को धार ॥६॥ सदा
कठिन तपस्या प्रभु जी कीनी, भोग मोक्ष सब वस कर लीनी
जगका किया उद्धार ॥७॥ सदा
ब्रह्मकुण्ड की महिमा भारी, तार दिये जिसने नर नारी।
पास गंगा जी की धार ॥८॥ सदा
ब्रह्म कपाली प्रेत शिला पर, पिंड दान पित्रों को देकर।
सभका बेड़ा पार ॥९॥ सदा
पुरी आपकी अजब सुहाई, तपो भूमि उत्तरा खण्ड गाई।
पाप कटे बसु धार ॥१० सदा
ऋषि गंगा और मूर्ति माई, होवे मुक्त जो वहां पर जाई।
सुन्दर कूर्मधार ॥११॥ सदा
श्रद्धा भक्ति प्रेम वडाय, जो २ शरण आपकी आय।
बेड़ा करते पार ॥१२॥ सदा
सोना राम जी अमीर चन्द भाई, लक्ष्मी देवी मीरां बाई।
गोविन्द साथ अधार ॥१३॥ सदा
खड़ग शाई और कुली शाई, यह दो कुली साथ लै आई।
मेल हुआ अपार ॥१४॥ सदा
कौशल्या का कुशल बढ़ाओ, महां व्रत आप निभावो।
महेश करो उद्धार ॥१५॥ सदा

भजन ४६

श्री रेणुका जी के, दर्श जो जन जायेंगे ।
पुन्य होवेंगे उदय जो नहायेंगे ॥टेक॥
देखकर आनन्द वन मन भागया,
रचना अलौकिक निरख मन हर्षा गया ।
बैठकर जो ध्यान प्रभु का लावेंगे ।श्री० रे०।१।
कमल फूल खिले सजे भूषण समां, हरे रंग के पात वस्त्र हैं रमां।
लाल फूल के तिलक भाल सजायेंगे। श्री०रे०।२।
रंग २ बिहंग स्वर को बोलते, मच्छ कच्छ जल जन्त सुन्दर डोलते।
मानों स्वागत करने आगे आयेंगे। श्री०रे०।३।
चारों ओर जो वन सघन सुहावना,
साधु संत सद् गृहस्थ के मन भावना ।
श्रद्धा भक्ति से जो यहां पर आयेंगे। श्री०रे०।४।
रिछ शेर के मन भी शान्ति छा गई,
भजन लिये भक्तों के मन को भा गई ।
भक्ति कर आनन्द को वह पायेंगे । श्री०।५।
ऋषि जमदगनी ने कहा परस राम से, हनन करदो मात मेरे धाम से।
पितृ भक्ति पाल कर दिखलायेंगे । श्री०रे०।६।
चरणों में चश्मा मनोहर गंग सम, परसराम खड़े कुहाड़ा हाथ थम।
वर पिता से पाय मात जिलायेंगे । श्री०रे०।७।
राम परस राम पितृ भक्त थे, शिरोमणि पूजित प्रतिष्टित जगत थे ।
पितृ सेवा जगत को दिखलायेंगे ।श्री० ।८।

जो जगतमें इस तरह प्रण पालते, दुःखदरिद्र को सदा वह टालते।
चारों पदार्थ जगत में वह पायेंगे । श्री० ।९।
गिरी गंगा के दर्श भागों से मिले इस्नान कर,
सतसंगियों के मन खिले ।
नहाते २ न मन किसी के अघायेंगे । श्री० ।१०।
अनुरुद्ध के माता पिता को संग ले, राज राजा राम को भी अंगले।
महेश दर्शन कर न मन तृप्तायेंगे । श्री० ।११।

भजन ४७

मैं की जाना चीर चुरैया, गोपियों के महाराज हैं ।
द्रौपदी के तो चीर बढ़ैया, सभा में राखी लाज है ।।टेक।।
मुरली बजा कर मन हर लीना, चितवन से तन मन हर लीना।
चोरों के सिरताज हैं, गोपियों के महाराज हैं । मैं०।१।
कूंजन बनकी शोभा महान, इक २ गोपी इक २ कान ।
लीला करत बृजराज हैं, गोपियों के महाराज हैं । मैं० ।२।
मोर मुकुट माथे तिलक बिराजे, अधर मधुर मुख बांसरी बाजे।
रास मंडल के साज हैं, गोपियों के महाराज हैं । मैं०।३।
धन २ हैं वह बृज की बाला, पुनः धन हैं वह बृज के ग्वाला।
जिनके कृष्ण मुहताज हैं; गोपियों के महाराज हैं ।मैं० ।४।
रास खेलत छिप गये मुरारी, आश्चर्य महेश यही बड़ भारी ।
कर्ता अकर्ता बाज है, गोपियों के महाराज हैं ।मैं० ।५।

भजन ४८

मैं सदके जांवां, भगतां दे–रहदें अंगे संगे ।टेक
सभा बीच जब रोई, द्रौपदा, धर्म का करत है भंगे ॥
आए बैकुंठ से गरुड़ छोड़ कर, धाये चरण से नंगे । मैं० ।१।
मीरां गिरधर नाम पुकारा, आते हुए न संगे ।
दे दर्शन अपना कर लीना, रंग दियो प्रेम दे रंगे । मैं० ।२।
गोपियों ने जब नाच नचाया, दे ताने बे ढंगे ।
खटी छाछ पिलाकर मोहन, बस कीनो श्री रंगे । मैं० ।३।
गन का कर्म हीन थी भगवन, चढ़ गई प्रेम तरंगे ।
होय कृपाल दियो वरदाना, फल पाये मुंह मंगे । मैं० ।४।
कुबजां नारी दासी बिचारी, चन्दन लायो अंगे ।
चरण छुआए करी पटरानी, धार लई अंगे संगे । मैं०।५।
भीलनी जात कुचील को तारा, बेर खाय मुंह मंगे ।
कर्मा बाई की खिचड़ी खाई, कर्म किये थे ंगे । मैं० ।६।
धन्ना पीपा सदन कसाई, रवदास कबीर भी रंगे ।
गज पशू तक तार दियो है, बल जाऊं मेरे हर रंगे । मैं० ।७।
आज्ञा आपकी थी मन मोहन, गुरु चरनन मन मंगे ।
दास महेश की सुनो बेनती, क्यों करते हो तंगे । मैं० ।८।

भजन ४९

दे दर्शन बंसरी वालड़िया, दर आन खड़े दरवेश तेरे ।।टेक।।
चुक परदा ते बहुती लाज न कर, साडे मूर्खां नाल मिजाज न कर

बूए पावांगे डाडे कलेश तेरे। दर० ।१।
सिर जावे सिदक न छडांगे, तैनूं पकड़ के अन्दरों कडांगे।
बूए चमडांगे होके सरेश तेरे। दर० ।२।
असी लोक लाज हुण खो बैठे, असी दुनिया वलों हथ धो बैठे।
हथ धोके पवांगे पेश तेरे। दर० ।३।
असी दर तेरे ते आ बैठे, असी अपना आप गवां बैठे।
बिना कोई न मेरा सुरेश तेरे। दर० ।४।
होई व्याकुल मैं तां वांग सीता, करो कृपा ते देवो दरश पिता।
महेश दास रहेगी हमेश तेरे। दर० ।५।

भजन ५०

सीते बन्दर बुरे तेरे शहर दे जी, डाडे गुसे भरे दिल कहर दे जी। ।।टेक।।

इक निका जिया बान्दर आ गिया जी,
सारी लंका दुखां विच पा गिया जी।
नेत्र भरे उसदे बड़े जहर दे जी। सीते० ।१।
अग लाके ते लंका जला गिया जी,
जान अपनी नूं आप बचा गिया जी।
टुकड़े कीते उसने लंका शहर दे जी। सीते० ।२।
फल खाके ते बाग उजाड़िया जी,
इक २ बृत्त नूं उखाड़िया जी।
राखे मार दिते रावण शेर दे जी। सीते० ।३।

पुत्र मार दिता रावण वीर दा जी,
दुःख देंदा सी बहुत फजूल दा जी।
पुन्य नष्ट हुए लंका घेर दे जी । सीते० ।४।
इक बाली दा पूत भी आया सी,
पैर रख के लंकेश हराया सी ।
शर्मिंदे हुए पैय पुकार दे जी । सीते० ।५।
तख्त बैठे दे मुकट गिरा गिया जी,
सभा बीच रावण शर्मा गिया जी ।
वचन कहदां रिहा बड़े वैर दे जी । सीते० ।६।
महेश कहंदी त्रिजटा सीता माता नूं जी,
धन पिता ते धन तेरी मात नूं जी ।
पतिव्रता दी ध्वजा दुपहर दे जी । सीते० ।७।

भजन ५१

जी अनोखो जायो ललनो, मैं वेदन में सुन आई ।
वेदन में सुन आई, मैं शास्त्रन में सुन आई । अनोखो ।।टेक।।
योगियों का यही योग है, ज्ञानियों का यही ज्ञान ।
प्रेमियों का यही प्रेम है, भगतों का यही ध्यान ।अनोखो।२।
वेद शास्त्र नहीं जप कियो, तप न कियो गज राज ।
रे मन ऐसे भगत को, राख लियो बृज राज ।अनोखा।३।

मोहनी मूर्त शांम की, नयना बने विशाल ।
मोर मुकट मकरा कृत कुंडल, अरुण तिलक दिया भाल ।अनोखा ।३
अधर सुधा रस मुरली साजे, उर बैजन्ती माल ।
छुद्र घंटिका कटि तट शोभे, नूपर शब्द रसाल । अनोखो ।४।
ऐसो लाला जन्मयो, जग में भयो प्रकाश ।
यही मूरती मोरे मन वसे, महेश करे यह आश । अनोखो० ।५।

भजन ५२

लोकी कहेंदे सत्संग बुरा है, मेरे तो सत्संग प्राण हैं ।
घर दे सारे रोकन तन नूं, मेरा तो वहां ही ध्यान है ।।टेक।।
सत्संग कर बड़े पापी वी तर गये, गणका अजामल पार उतर गये।
कर २ राम का गान है। मेरे० ।१।
वालमीक ऋषि डाके मारे, तर गये राम नाम मुख धारे ।
ऋषियों में वड़े महान हैं। मेरे० ।२।
मीरां वाई ने दुख उठाये, प्रह्लाद भगत पर्वत से गिराये ।
छोड़ी न सत्संग की बांन है । मेरे० ।३।
बड़े २ सत्संगी दुख पावें, फिर भी न सत्संग तो शर्मावें ।
इसी में उन की शांन है । मेरे० ।४।
जुग २ भगतों की रत्ता करते, प्रेम के पीछे नर तन धरते।
महेश कृपालू भगवान हैं । मेरे० ।५।

भजन ५३

उठो बहनो खोलो आंखें, क्यों सोई बेहोश निन्द्रा से ।
धर्म अपने की रक्षा तुम, करो अब जाग निन्द्रा से ।।टेक।।
समय है घोर अति भारी, युद्ध अन्याय का जारी ।
करो तुम मेल अब सारी, यह अवसर जाग निन्द्रा से ।उठो० ।१।
न कोई रक्षक सहारा है, पिता माता न हमारा है ।
द्रौपदी को जिसने तारा है, शरण लो जाग निद्रा से ।उठो० ।२।
करी सेवा उमर सारी, पुरुष जाती की है नारी ।
विपति अब पड़ गई भारी, न जगने देते निन्द्रा से ।उठो ।३।
आदि से कर दिया कमज़ोर, बच्चों को क्या सिखाती और ।
समय अब आ गया है घोर, न उठाते मोह निद्र से ।४ उठो।
धर्म की विद्या सारी जो, पढ़ी थीं स्त्री प्यारी जो ।
बनी है योग्य नारी सो, जगी जो घोर निद्रा से ।५ उठो ।
भारत माता भी नारी है, सीता सावित्री सारी है
उपनिषद माता हमारी है, जगाती मोह निद्रा से ।६ उठो ।
स्त्री जाती जो दुःख पावे, भारत माता तो घबरावे
जाती अपनी का सुख चावे, पुरुष नहीं जाने निद्रा से ।७ उठो।
महेश्वरी कहती भाईयों से, करो तुम मेल मांईयों से ।
लक्ष्मी अवतार आईयों से, विजय हो जाग निद्रा से । ८ उठो।

कन्या विलाप ४५

नी मैं कानूं जमी सी, नी मैंनित कुटीं दी सी
कोई मेरे ज़न्म नूं चांहदा नां, नी कुटी चर मेरा नां । टेक।

दोहा जन्म लिया जब दाई पुकारा, शोक भरी अवाज़।
हुई लड़की सुखों यहा उचारा, बिगड़ गया सब काज।१।नी
कानूं जन्म लिया सी, हर २ इतना दुख भरा सी हर २
नी इक दाई रोवे, हर २ घर में माई रोवे हर २
घर में बाप रोवे, हर २ पिया कलाप होवे हर २
नी सभ दुनियां-आई हर २ ना कोई लय वधाई हर २
सभ कोई यही-पुकारे हर २ बड़ी आशा हमारे हर २
दोहा पिछे इसके लड़का होया, लोग देवें वधाई।
घर के सारे खुशी मनावें, सगन पाये लुगाई।२। नी
माता शिक्षा देंदी-हर २ मत यह चीज तूं लैंदी हर २
तेरा भाई आवे-हर २ नी वह आके खावे हर २
उच्चा बोल न वेखी-हर २ आया बाबू देखी हर २
दिल में भई उदास-हर २ किसदे बैठा पास हर २
नी इह कपड़े गहने-हर २ नी इह बहू ने लेने हर २
दोहा कर त्रिसकार तिसका सदा, उत्साह किया विनाश।
बुद्धि दिमाग सब नष्ट कर दियों, सभ की बन गई दास।३।नी
शुरु से दब दी आई-हर २ अपना आप गवाई-हर २
सब कोई हलका देखे-हर २ नी मैं किसे न लेखे-हर २
तूं तां सौरे जासें-हर २ कपड़े गहने पासें-हर २
इथे कुछ नहीं तेरा-हर २ पक्का नां ला डेरा-हर २
जिथे जमी जाई-हर २ मेरा कुछ नहीं भाई-हर २
दिल में दुख बहुतेरा-हर २ इहां कुछ नहीं मेरा-हर २

दोहा बड़ी हुई सब यही विचारें, इसका कीजे घार।
दे कर इसको वस्त्र थोड़ा, घर ते कीजे बार।४। नी
दिते कपड़े चार-हर २ घर से कीनो बार-हर २
अगे सास निहारी-हर २ नी यह वहू विचारी-हर २
नी जब देखे पुत्तर-हर २ नी वह मारे छितर-हर २
खबरे क्या बनेगी-हर २ मेरे सिर चढ़ेगी-हर २
डर २ उमर गवाई-हर२, अपना आप भुलाई-हर२
नी इक सास जिठानी-हर२, झिनकां देवे दिरानी-हर२
मालिक मुंह नहीं लांदा-हर२, अपने सुख को चांहदा-हर२
दोहा देख देख गुण जनों के, मन में उपजी शान्त।
मिलवे को चित न चहे, किन्तु मिट गई भ्रान्त ॥५॥
नी मैं क्यों बिहाई सी, नी मैं किथे आई सी।
कहां ऋषि केश हमारा है, यह तो यवन द्वारा है।
दिल में हुआ विराग-हर२, किथे जांवा भाग-हर २
न कोई चंगा लागे-हर२, मन सत्संग नूं भागे-हर २
मेरे देव के लक्षण-हर २, घर के अन्दर डफन-हर २
न कोई रोटी देवे-हर २, अपनी सेवालेवें-हर २
इक भगवान प्यारा-हर २, मैंनूं यही अधारा-हर २
दूध मलाई पेड़े-हर २, सब दुनियां को प्रेरे-हर २
मैंनूं आन खिलावें-हर २, दिल में धीर बंधावें-हर २

दोहा इसमें किंचत् कर दिया, अपने दुख को गान ।
कहुं युक्ति अब ज्ञान की, सुन लो धर के ध्यान ॥६॥ नी मैं

पिता जी ने जो सिखलाई थी, गुरु जी ने जो बतलाई थी।
मैंने वर्त के देखी जो, जीवन सफल करेगी सो।
सतगुरु बिना न होवे ज्ञान-हर २ इसमें वेद शास्त्र प्रमाण-हर२
जो यह चंगी होवे आप-हर २, सास सुसर को माई बाप-हर२
यदि यह अपना आप गवाय-हर ५ पति प्रसन्न करे मन लाय-हर२
निजानन्द में मौज उड़ाय-हर २ दुख कलेश नजरी न आय-हर२
युक्ति एक बताऊं भैन-हर २ जे तूं समझें मेरी सैन-हर २

दोहा निवन सुअच्छर खिवन गुन, जेह्वा मनीयां मन्त ।
इह त्रय भैना वेस कर, तो वस आवी कन्त ॥
मैं सत्संग बिच आई जी, सुन्दर युक्ति पाई जी ।
यदि तुम यहि कमावोगी, तो निश्चे सुख को पावोगी ॥

सुन प्यारी दृष्टान्त इक सार-हर२, जिसमें देखो ब्रह्म बिचार हर२
एक उदर में दोनों आये-हर२, लड़की लड़का नाम कहाये-हर२
भिन्न २ इससे व्यवहार-हर २, यह देखा सब में प्रचार-हर२
इक दृष्टान्त सुनो तुम प्यारी-हर२, नहीं होवे फिर तुझें खुवारी-हर२
लड़का ईश समान पहचान-हर२, लड़की जीव रूप को जान-हर२
एक ब्रह्म के दो प्रति बिम्ब-हर२, माया अविद्या भई सबिम्ब-हर२
इसमें है इक वेद प्रमाण-हर२ बृक्ष एक दो पंछी जान-हर२

दोहा प्रकाशे इक ही सदा द्वितीय कर्म प्रधान ।
साची सदा प्रकाश है, प्रति बिम्ब साच्च को मान -हुन मैं
भाई करे बहन से प्यार-हर२, जीव रहे ईश्वर आधार-हर २
हाथ भाई के है घर वार-हर२, ईश्वर के हथ है संसार-हर २
भाई घर से देत निकाल-हर२, ईश्वर जन्म मरण की चाल-हर१
बहन जबी भाई को चाहे-हर२, भाई तिसको घर लै आहे-हर२
चौरासी के भुगतन हारा-हर २, देख लौ तुम जीव वीचारा-हर२
भगती करे ईश्वर की जब ही-हर२, अपना आप दिखावे तब ही-हर२
पिता हंकार ममता है माई-हर२, शुद्ध बिचार बनावो भाई-हर२
अविद्या उपाधि कहावे जोई-हर२, लैप्रति बिम्ब साची का सोई-हर२
जीव संज्ञा नाम कहावे-हर२, जब वह अपना आप मिटावे-हर२
तब वह साची में मिल जावे-हर२, साची ब्रह्म अभेद कहावे-हर२
दोहा साची और ब्रह्म को, रहे सदा अभेद ।
गुरू कृपा से पाइये, महेश मिटे सब खेद ॥ ६
हुण मैं शान्ति पाई जी, मैनूं दियो वधाई जी ।
मैंनूं दियो वधाई जी, जीवन मुक्ति पाई जी ॥

भजन ५४

सुन जिंद निमाणी जी-हां, सब दसां हाल मैं खोल के ।टेक।
कैद खाना इस दुनियां का भारी, कई दुखों से भरिया ।
लम्बी कैद चौरासी लख की, सब कोई इससे डरया ।
कई जन्म बिताय जी-हां, जेहलां बिच जिंदड़ी नूं रोलके ।१।सुन

लख चौरासी कोठड़ियां, इस जेहल खाने दियां बनियां।
सेज सूलां की सौना पड़ेगा, पैरी बेड़ियां हथ हथ कड़ियां।
नाले जमदूत डरांदे जी-हां, लै जांदे खून नचोड़ के।२सुन।
इक दरवाज़ा निकलन वाला, सो भी ऐंश बहारां भरिया।
देख कैदी दा मन ललचांदा, मुड़ मुड़ जांदा फड़िया।
पिछों पछतांदे जी-हां, विषयांविच जिंदड़ी रोड़ के।३सुन।
इस दरवाजे बिच स्वामी, बैठा दरबार लगा के।
देख मिसल नूं फैसला करदा, कैदी नूं समझा के।
फल मिलदे जांदे जी-हां, कर्मां दी गठड़ी खोल के।४।सुन
जे तूं ऐंश बहारां छोड़े, बेड़ियां कड़ियां तोड़ें।
पा पलड़ा गल बिच अपने, गुरां आगे हथ जोड़ें।
जन्दरे खुल जादें जी-हां जप तप दियां कुजियां मरोड़ के।५।सुन
इस दरवाजे बिच बतेरे, तैनूं ठग लुटेरे मिलदे।
मूर्ख लोग उन्हां दियां गलां, सुन सुन हसदे खिलदे।
जो चतुर लच जांदे जी-हां, ठगां तों मुखड़ा मोड़ के।६।सुन
इसी तन बिच मिल दे जी, तेरी कैद छुड़ावन वाले।
मुफत वकील गरीबां दे, दुख दर्द मिटावन वाले।
जी वो सन्त कहांदे जी-हां, तूं अरज करीं हथ जोड़ के।७।सुन
लख चौरासी भटक २, नर जन्म मसीं हथ आया।
मानुष जन्म अनमोलक हीरा, विषयां बिच रुलाया।
धोखे बिच आदें जी-हां, विष पिछे अमृत छोड़ के।८।सुन

इहो इक दरवाजर सुन्दर, अखां खोल ज़रा तूं बीबा ।
गली अन्धेरी लंघने तांई, तैनूं इथों ही मिलसी दीवा ।
प्रभु दर्श दिखांदें जी हां, इहो दरवाजा खोल के ।९।सुन
इस प्रभु दे दिदार करावन, वाले सतगुरु प्मारे ।
भेट उन्हां दी मिलदी नांही, शीश चरण पर धारे ।
दुख काटन हारे जी हां, अमृत पिलादे घोल के।१०।सुन
मैं बलिहारी जाऊं उन्हां ते, जिन्हों ने दर्श कराया ।
जन्म मरण दा औखा पैंडा, जिन्हों ने आन मुकाया ।
मैं रूड़दी जांदी नूं, कढ़ लीता बांह टटोल के।११।सुन
राग द्वेष की पीक निकाली, छुरी वैराग करेला ।
तत्व मसि इह शब्द सुनाकर, घाव भेद का मेला ।
फिर पट्टी लगाई जी-हां. इक तत्त दिया निचोड़ के।१२।सुन
भूल न जांवीं इस नुसखे को, फिर भी काम कभी आवे ।
जो जज्ञासू पूछे तुम से, तिस को भी समझावें ।
जी वहनों असली नुसखा जी, महेश्वरी कहे हथ जोड़ के।१३।सुन

भजन ५५

हीरा अनमोल जन्म, बृथा न खोंदा जाई ।
अनित पदार्थ सारे, मन तो भुलांदा जाई ।।टेक।।
मोह नूं छोड प्यारी, धंध्या नूं रोड़ वारी ।
इको भगवान सच्चा, दिल नूं लगांदी जाई । हीरा० ।१।

भगवान न मन्दिर वसे, गंगा न जमना वसे।
चित दे पुर्जे अन्दर, प्यारे दे दर्शन पाई। हीरा० ।२।
जगत नूं भुल्ल जांवीं, प्रेम ते तुल जावीं।
इको ही ईश्वर सब में, प्रेम बड़ांदी जांई। हीरा० ।३।
असली जो काम भैना, उसका ना नाम लैना।
झूठे है सारे नाते जिनसे तू प्रीत लगाई। हीरा० ।४।
धोखे इह देवन सारे, इनसे तूं रहीं किनारे।
ईश्वर है पक्का नाता, उसी से प्रेम वड़ाई। हीरा० ।५।
पल छिन दा संग तेरा, जिना विच लाया डेरा।
आखिर तो जाना होगा, सच्ची दरगाह माई। हीरा० ।६।
किसे नूं कुछ न आखीं, अपना ही रहीं साक्षी।
जिस किसे तरां महेश, पलड़ा छुड़ांदी जांई। हीरा० ।७।

भजन ५६

वे मनुआं लाल हथां विचों डिग पिया, तेरे की हथ आवेगा।
बृथा मानुष जन्म गवाया, पश्चाताप ही आवेगा ।।टेक।।
जे सत पुरुषां दी संगत होवे, बृथा वक्त कभी न खोवे।
आत्म ज्ञान उन्हां तो लेवे, फिर मन शान्ति पावेगा। वे० ।१।
सतगुरु चरणां ते शीश निवांई, सच्चे दिल से सेव कमाई।
अमोलक समय दी कीमत पांई, गिया फिर हथ नहीं आवेगा ।वे०।२।
किस्मत नाल मिला सत्संग, हुण न पावीं इस विच भंग।
सत गुर रंगन ज्ञान दा रंग, गूढ़ा रंग चढ़ जावेगा। वे० ।३।

जे इस समय दा मुल नहीं पाया, तैंने बहुत ही जुलम कमाया।
आया हथ विच लाल गवाया, पिछों कर्मा नूं रोवेंगा। वे० ।४।
महेश हो जावीं हुश्यार, सतगुर चरणां तो बलिहार।
बेड़ा डुबिया करेंगे पार, गुरां से ही भिक्षा पावेंगा। वे० ।६।

भजन ५७

कानूं दिल ला लिया, झूठे जग नाल तैंने मूर्खा-हां बंदे हा।
मूल भी गवां लिया हां मूल भी गवां लिया-झूठे ॥टेक॥
इस जग मांही हुए बथेरे, ओवी टुर गये जिनां लाय नी डेरे।
तूं जावेगा निकालिया, हां जावेगा निकालिया -झूठे।१।
हो गये पीर फकीर अमीर, धन संग्रह में बड़े बलबीर।
डेरा किसे न पालिया, हां डेरा किसे न पालिया -झूठे।२।
मेरी २ कर उठ २ जांदे, मिले न कुछ तो भी नहीं शर्मांदे।
जीवन रुला लिया, हां जीवन रुला लिया -झूठे।३।
अब तो समझ ले दिल के अंधे, दुनियां मर गई जग दे धंधे।
अपना आप भुला लिया, हां अपना आप भुला लिया झूठे।४।
मोह ममता में तैंने दिन बिताय, सुख वा धीर्य शांति गवाय।
दुख ही उठा लिया, हां दुख ही उठा लिया -झूठे।५।
दास महेश यह अरज गुजारे, मनुष्य जन्म न बारम्बारे।
सन्तां ने समझा लिया, हां ग्रन्थां ने भी गा लिया- झूठे।६।

भजन ५८

मेरियां मन दियां मन विच रहियां, कीतियां काल चढ़ाईयां नें।।टेक।।
अजकल कर दियां उमर गुजारी, बीती गई जवानी सारी ।
दुर्बल हो गई जान विचारी, औखियां घाटियां आईयां ने।१।मेरि०
मुखों ओं नाम नहीं जपिया, ना कोई तीर्थ न तप तपिया।
दुख दरिया नहीं जांदा टपिया, बेड़ियां आप रुड़ाईयां ने।मेरी०।२
लगे रह गये बाग बगीचे, बिछे रह गये फर्श गलीचे ।
अपनी हथीं कंडे बीजे, तलिया आप बियाईयां ने । मेरियां०।३
कीते सभे कंम निराले, प्रभु दी भगती छुड़ावन वाले।
खोले कौन दिलां दे ताले, चावियां आप गुवाईयां ने। मेरियां०।४
वारी सफर करन दी आई, न तन जोर न पल्ले पाई।
पिछली करनी चेते आई, रो रो दियां दुहाईयां ने।मेरियां०।५
चले राही देश पराये, वारी संकट कौन मिटाये।
हुण तां प्रभु बिन कौन छुड़ाय, लख चौरासियां आईयां ने।मे०।६
दया धर्म कुछ कीजे दान, परम कृपालू हैं भगवान।
इस विध होवेगा कल्याण, क्यों नेकियां मनों भुलाईयां ने।मे०।७
हुण भी वेला हो हुश्यार, बेड़ा प्रभु जी करसन पार।
महेश निश्चय दिल विच धार, आशा छोड़ पराईयां ने।मेरि०।८

भजन ५९

अमोल समय पाके, तैने काम क्या किया ।
पालन न करी गुरु आज्ञा, प्रण जिसका कर लिया ।।टेक।।

बैठ सती कुण्ठ पास, ध्यान जब किया।
बड़ी दुखी है विद्या, हाथ जिगर में दिया ।१। अमो०।
रोवो न रोवो सखी, धीरज मन में कीजिये।
फल भोगना पड़े ज़रूर, कर्म जो किया ।२। अमो०।
वियोग जब लिखा तेरे, संयोग क्यों चहो।
बोवोगी किक्कर बीज, फल होवे नहीं बीया ।३। अमो०।
समय मिला अनमोल था, जब तुम्हें कभी।
कीमत न पाई हे सखी, मुफ्त ही खो दिया ।४। अमो०।
उपासना करो सखी, बैठ दिल सच्चे।
शाम सुन्दर महेश, फिर आ मिले पिया ।५। अमो०।

भजन ६०

वे न रोवो नयनो पापियो, बिन भोगे कर्म गति मुकदी नहीं।
दिन सुखदे पल विच मुक जांदे,
घड़ी इक दुखां वाली मुकदी नहीं ।।टेक।।
सुखिये तां ऐशां करदे ने, दुखी दुख दे हौके भरदे ने।
न जींवदे ना वो मरदे ने, मैडी मौत भी नेड़े ढुकदी नहीं ।१। वे०।
सुखी सुख विच खेडदे हसदे ने, दुखी दुख गमां विच वसदे ने।
दुख फोलके सबनूं दसदे ने, देखो मौत भी सानूं चुकदी नहीं ।२। वे०।
सुखी बूट पुशाकां पोचदे ने, दुखी बैठ इकटे सोचदे ने।
पईयां बिपता ते सुखां नूं लोचदे ने,
गति कर्मां दी कदी रुकदी नहीं ।३। वे०।

की मैंड़े कर्म असी कीते ने, ओहें बदले साथों लीते ने।
दिन कोई न सुख दे बीते ने, कभी नजर महेश ते मुकदी नहीं।४।वे

भजन ६१

सारे अपने करमों का जाल जी,
रो २ विर्था करो बुरा हाल जी ।।टेक।।
रज २ के पाप कमाये ने, ला कन्ट्रोल ते जीव दुखाये ने।
हट्टी २ गरीब रुलायने, अपने भाईयां ते पा दिता काल जी ।१सा०
कर ब्लैक पैसे कमाय हैं, वो ही काल रूप धर आय हैं।
खाने वाले न आन छुड़ाय हैं, बखशनहार तो एक नन्दलाल जी।२स०
किथे गईयां वह महल ते माड़िया, सीमिन्ट ते गाडर नाल चाड़्या।
बन गईयां मसान दीयां झांगियां,
चाड़न वालियां को लै गईयां नाल जी ।।३
बड़े सख्त जुलम कमाय ने, सूला वालड़े वृक्ष चा लगाय ने।
भोगन वेलड़े शोर मचाय ने, कौन बनेगा अगे दलाल जी ।४सा०
खा पी के मौजां माणियां, हुण आगईयां काल निशानियां।
यम दूत आवन जब प्रानियां, देखन बृद्ध जवान न बाल जी ५।सा०
बड़े भाग जो बच के आगये, गंगा माई की गोद को पा गये।
ईथे आके भी जो शर्मा गये, भगवान उन्हां दा रखवाल जी६।सा०
अब घोर कलयुग आ गया, बड़ियों २ का दिल घबरा गया।
महेश विरला ही अज कल जागिया, शूर वीर गुरु का लाल जी७।सा०

भजन ६२

तूं ना कर बन्दे मान, मान नहीं हर को भाता है।
अभिमान नरक की खान, अभिमान सर्वस्व घटाता है ॥टेक
जो तपी करे अभिमान उसका तप घट जाता है।
यह मोह माया का जाल तपी को कपी बनाता है ।१। तू०
जो धनी करे अभिमान, उस का धन घट जाता है।
राजा को करे कंगाल, दर दर भीख मंगाता है ।२। तूं०
जो बली करे अभिमान, उस का बल छिन जाता है।
रावण जैसे बलवान, मार कर खोज मिटाता है ।३। तूं०
विद्वान करे अभिमान, ज्ञान सब निश्फल जाता है।
फल विद्या भोगऔर मोच, दोनों में एक न पाता है ।४। तूं०
जो दानी करे अभिमान, दान का फल नहीं खाता है।
करे ईश्वर अर्पण दान, बली सम हरि को पाता है ।५। तूं०
बहिनों तजकर के अभिमान, जो अपने लक्ष को पाता है।
कहे हाथ जोड़ महेश, हरि को मान न भाता है ।६। तूं०

भजन ६३

होवे परमादी मन जो, इकान्त वेदान्त विचारा कर ॥टेक॥
जो २ शिक्षा उसमें, सो मनके बीच धारा कर। ॥ १ ॥ होवे०
तत्वं निर्णय प्यारी, बुद्धि के साथ नितारा कर। ॥ २ ॥ होवे०
अंश विरोधी त्यागो, लक्ष का एक सहारा कर। ॥ ३ ॥ होवे०

साक्षी चेतन केवल, एको चिन्तन भारी कर। होवे० ॥४॥
कर्म का कर्ता भुगता, क्रिया से सदा किनारा कर। होवे० ॥५॥
मन और वाणी नेत्र, महेश संयम धारी कर। होवे० ॥६॥

भजन ६४

चुपकर २ चुपकर वे—मनां—चुपकर २ चुपकर।
चुप विच आत्म सुख वे—मनां—चुपकर २ चुपकर ॥टेक॥
चुप कीती श्रोत इन्द्री ने जब ही, निन्दा हो गई बन्द वे !१।मना
चुप कीती त्वचा इन्द्री ने जब ही, शीतोष्ण करे न तंग वे २।मना
चुप कीती चक्षु इन्द्री ने जब ही, दोष दृष्टि न आवे मन वे ३।मना
चुप कीती रसना इन्द्री ने जब ही, लोभ गया फिर नस वे ४।मना
चुप कीती घ्राण इन्द्री ने जब ही, सुगन्धी दुर्गंधी हुई बस वे ५।मना
चुप कीती वाक् इन्द्री ने जबही, झगड़ा तो मिट गया तब वे ६।मना
चुप कीती पाणि इन्द्री ने जबही, लेन देन गयो भग वे ७। मना
चुप कीती पाद इन्द्री ने जबही, इत उत भागे न तब वे ८। मना
चुप कीती उपस्थ इन्द्री ने जब ही, काम का लगे न दब वे ९।मना
चुप कीती वायू इन्द्रों ने जबही, यम का दाव न लग वे १०।मना
रे मन तू भी चुप कभी करता, द्वन्द तो मिट जाय सब वे ११।मना
द्वन्द तेरे ने अति घबराया, सबका किंकर आन बनाया।
आत्म सुख गिया छुप वे—मनां—चुपकर २ चुपकर १२।मना
अब तो चुपकर बैठ मनां तूं, ब्रह्मविद्या ने जम लीया सुत वे १३।मना

जचा स्त्री है अति कोमल, बोल न सहंदी रत वे । १४ । मना ।
तूं तो हल चल शैला पाया, ब्रह्मविद्या का जी घबराया ।
ज्ञान को न देवे सुटवे । ५ । मना ।.
विन माता से पूत ज्ञान भी, महेश जायगा सुक वे । १६ । मना ।

भजन ६५

आदत दे मजबूर जी सइयो, आदत जे मजबूर जी ।
ब्रह्म से मैंने जीव कहाया, हो गया अब मशहूर जी सइयो ।।टेक।
वहुत दिनों की पक गई आदत, नख शिख तक गई पूर जी भैनो ।
इसने मुझ को वहुतरु लाया, भुल गया अपना नूर जी सइयो ।१आ
अति कोशिश कर इसको पोसू, कर देऊं चूरो चूर जी भैनो ।
सामिग्री इसकी मिल जावे, तब यह होवे दूर जी सइयो ।२आ
चार साध की कूंडी होवे, प्रेम का डंडा जरूर भैनो ।
तत्व मसि यह ला कर रगड़ा, कर देऊं चकना चूर जी सइयो ।३आ
सतगुरु कृपा जिस पर होवे, तो कुछ नांहि दूर जी भैनो ।
मन अपने को शुद्ध सरल कर, श्रद्धा से करो भरपूर जी सइयो ।४आ
एक अरज मेरी सुन लीजो, दिल से छोड़ो गरूर जी भैनों
परम हित से कहूं मैं चित से महेश करो मन्जूर जी सइयो । आ

भजन ६६

क्यों छड सत संगिया दा संग, कुसंग वल नसदा फिरें ।।टेक
मोती छोड़ विष्टे वल जावें, वार २ तू चोटी खावें ।
छड हंसा दा संग ।।१।। कुसंग वल ।।

जब सतगुरु की शरणी जावो, कागों से हंस बन जाओ।
न होवोगे तंग ॥२॥ कुसंग ॥
कोयल काग दोनों रंग काले, कम दोनों के हैं निराले।
क्यों भुल्यों देख के रंग ॥३॥ कुसंग ॥
लालच लगा कर दुनियां वाले, शुभ कर्मों से रहन निराले।
छोड़ दिया सत्संग ॥४॥ कुसंग ॥
यह जग धोखे की है टट्टी, सब मिल पांदे मोह की मट्टी।
भजन में पांदे भंग ॥५॥ कुसंग ॥
दास महेश रहीं हुशयार, जे तूं बेड़ा करना है पार।

भजन ६७

चला चल मुसाफीर, जगत है सराय।
सराय में काहे को जीया लगाय ।टेक॥
यह नाते वा रिश्ते, मुसाफिर हैं सारे।
न कोई भाई वन्धू, न कोई वाप माय। १चला।
न है कोई नाता, पति पुत्र भ्राता।
पर लोक में साथी, वने जो सहाय। २चला।
कर्म करे जोई, भुगतेगा सोई।
वृथा मोह लगाया, वनेन गवाये। ३चला।

जगत की जो माया, यह वृच्छ की छाया।
यह मेरा यह मेरा वृथा क्यों चिल्लाय ।४चला।
हो जा महेश तूं, इन से किनारे।
मिले ब्रह्मानन्द, तुझे फेर थाय ।५चला।

भजन ६८

होर भी नींवा होवे मनुवा, होर भी नींवा हो ।
मतें चढ़े जगत दी वो, मनुआं होर भी नींवा हो ॥ टेक
जे तेनूं पीया मिलन दा चाह, सिर धर तली गली मेरी आ
फिर तूं अपना आप गवा, सब दुनियां दी लज्जिया खोह ।१। वे
की तूं खटिया जग बिच आके, हीरे जिया जन्म गवाके।
तौ नूं पुच्छनगे फिर आके, रख सम्भाल मिला है जो ।२। वे
रावण कंस बड़े अभिमानी, असली बात उन्हों ने न जानी।
राम कृष्ण पर करी ग्लानि, जिन्हां नूं चढ़ी जग दी वो ।३। वे
सत गुरु कहदें आप जबानी, गल न पा विषयां दी गानी।
इह तां दुदखां बिच नहीं आनी, इन्हां नूं रखीं न गले परो ।४। वे
जिन्हां ने शरण गुरां दी लई, उन्हों की उमर सफल हो गई।
उन्हां दी सारी चिन्ता गई, महेश तूं चरण गुरां दे धो ।५। वे

भजन ६६

ईश्वर दे चिन्तन अन्दर, मन नूं लुभांदा जांई ।
झूठे हैं सारे नाते, मन तो भुलांदा जांई ॥ टेक

लगियां न तोड़ बैठीं, धंदियां नूं छोड़ बैठी ।
सच्ची प्रीत लगाके, तोड़ निभांदा जाई ।१। ईश्वर
मन्दिर न मसजिद जांवी, गंगा न जमना नहावी ।
अपने ही मन दे अन्दर, प्यारे दा दर्शन पाई ।२। ईश्वर
विषयां नूं भुल जांवी, नेकी ते तुल जांवी ।
जुलम दे बदले बंदिया, नेकी कमांदा जांई ।३। ईश्वर
जिस दे तूं पास रैना, उसदा ना नाम लैना ।
झूठे हैं भाई भैनां, जिनसे तूं प्रीत लगाई ।४। ईश्वर
धोखे इह देवन सारे, इन से तूं रहीं किनारे ।
ईश्वर है पक्का नाता, उसी से प्रीत लगाई ।५। ईश्वर
पल छिन दा संग तेरा, जिनां विच लाया डेरा ।
आखिर नूं जाना पैसी, सच्ची दरगाह भाई ।६। ईश्वर
किसे नूं कुछ न आखीं, अपना ही रहीं साची ।
जिस किस्म तरां महेश, पलड़ा छुड़ादां जाई ।७। ईश्वर

भजन ७०

चिड़ियां चुग गईं जी, चुग गईं सारा खेत ।
चिड़ियां चुग गईं जी ॥ टेक ॥
ना कोई वाड़ ते ना रखवारा, पशु पची ने घेरा डारा ।
कैसे बचे यह खेत ॥१॥ चिड़ियां ॥
अज्ञान नींद ने घेरा भारी, अभी तक नहीं नींद उघारी ।
मूर्ख रहा अचेत ॥२॥ चिड़ियां ॥

इक २ स्वांस अमोलक हीरे, काम क्रोध है चोर वे पीरे ।
सोतों को लुट लेत ॥ ३ ॥ चिड़ियां
वेद शास्त्र सब यही पुकारें, अब तो जाग तूं नयन उघारे ।
शाह से होया सेत ॥ ४ ॥ चिड़ियां
परम स्नेही विवेक तुम्हारा, उसे बनाओ तुम रखवारा ।
लै विराग का बैंत ॥ चिड़ियां ॥
सम सन्तोष घाड़ लगावो, जिसकर पीछे न पछतावो ।
महेश होवे सचेत ॥ चिड़ियां ॥

भजन ७१

आत्म ज्ञान ववेक को पाया करो,
मानुष जन्म को सफल बनाया करो ॥टेक॥
चार २ साधनां को, जो बताते हैं गुरु,
अधिकार जिनका देखते, तिनको सिखाते हैं गुरु ।
सतगुरु आज्ञा को, मन में जमाया करो । १ । आ०
जीव और ईश का, स्वरूप जानोगे जबी ।
माया और अविद्या के, पड़दे को फाड़ोगे तबी ।
महां वाक को, खूब रटाया करो । २ । आ०
अवधी इस की यही है, अध्यास को ही छोड़ना ।
रस्सी का जब ज्ञान होवे, सर्प भ्रम को तोड़ना ।
वृत्ति देह अध्यास से, हटाया करो । ३ । आ०

समष्टी और व्यष्टि के, स्वरूप को जब जानोगे।
सर्वज्ञ और अल्पज्ञ के, निर्णय को तब पहचानोगे।
भेद भरम की वृत्ति को, हटाया करो। ४। आत्म०
वृच्छ २ व्यष्टि है सभ, मिल बगीचा ही कहें।
बुद्धि में प्रतिबिम्ब नाना, जीव संज्ञा को लहें।
समष्टि एक विराट को, पाया करो। ५। आत्म०
ईश और गुरु देव शास्त्र, की कृपा से भान है।
आपने पुरुषार्थ की भी, साथ इसके तान है।
फिर दृढ़ अपरोक्ष, को पाया करो। ६। आत्म०
ज़ानकर स्वरूप को अह्लाद होवेगा बड़ा।
लोक और परलोक की, लज्जा का फोड़ोगे घड़ा।
महेश सतगुरु जी के, गुण गाया करो। ७। आत्म०

भजन ७२

सुनो सतसंगनों बहनों, कहूँ इक खेल मैं आली।
रचे हैं रंग जो चारों, चिमन जग के जो हैं माली ॥टेक॥
खानी है चार जो इसमें, चराचर जीव हैं जिसमें।
सत इक आत्मा तिस में, नाम और रूप हैं जाली।१। सुनो०
यका है ओं का बिन्दु, दुकी आकाश में इन्दू।
तिकी तीन गुण हैं सिंधू, चौकी चार वेद कहें वाली।२। सुनो
पंजी पंच तत्त्व हैं प्यारी, छकी छे रस हैं धारी।
सत्ती सत धातु हैं न्यारा, अठी आठ वसू की थाली।३। सनो०

नहला नव ग्रह को जानो, दहला दस इन्द्रीयें मानो।
तीन गुलाम को मानो, बेगम माया की है नाली ४। सुनो०
बादशाह ईश है प्यारा, सकल जिसका यह पसारा।
करो विचार तुम सारा, महेश मनको करो खाली ५। सुनो०

भजन ७३

सुनो सखियो कहूं तुम से, गुप्त एक खेल है प्यारी।
द्रौपदी मीरां बाई ने, खेलो थी जो मेरी प्यारी ॥टेक
कर्म औ भगती ज्ञान तीनों, इन में प्रेम को बीनो।
अवल इस रंगको चीनो, करें बादशाह को भिखारी १। सुनो
दुक्की भी जीत सकती है, बेगम भी उससे दबती है।
नहला दहला न रखती है, यक्के को नीचा कर डारी २। सुनो
त्रिकी चौकी पंची छक्की, सती अठी न रह सकी।
गुलामी गुलू की मुक्की, रंग जब प्रेम है जारी ३। सुनो
रंग जब भगत लाते हैं, प्रभु जी फेर आते हैं।
भीलनी के बेर खाते हैं, बली की करते रखवारी ४। सुनो
प्रेम का रंग जब लाओ, न धोखा महेश तुम खाओ।
शीघ्र फिर ज्ञेय को पावो, मनुष्य तन मोक्ष की द्वारी ५। सुनो

भजन ७४

करो सत्संग दिल सच्चे, न राखो भेद तुम आली।
रहना चन्द दिवस इस तन में, होवेगी यह सरां खाली ॥टेक॥

डाकू यहां बहुत रहते हैं, कार्य अपने को करते हैं।
किसी से वह न डरते हैं, रहो हुशयार तुम वाली १। करो
मोह राजे की है सैना, सीखो ववेके तुम बहना।
खड़ग सत्संग से लेना, मोह की रात्र है काली २। करो
ठग यह हैं बहुत भारी, न करना राग तुम प्यारी।
रहो इस से सदा न्यारी, बजाते रहें बृथा गाली ३। करो
सूरज ववेक जब आवे, मोह अंधकार सब जावे।
जीव फिर मोक्ष को पावे, मिटे सब कर्म की जाली ४। करो
मनुष्य तन का कर्तव्य जोई, सफल सत्संग से होई।
महेश दिल से करे कोई, कुफ्र मन का करा खाली ५। करो

भजन ७५

बिना सत्संग के प्यारी, न होती पार यह नैया॥ टेक।
चक्कर मोह जाल का भारी, न साथी है पिता मैय्या।
देखो पंजाब की ख्वारी, कौन तुमरा है रखवैया १। बिना
देखा जब अपने नयनों से, हुआ अधर्म बहनों से।
चले सब छोड़ सैनों से, रक्षिक न पुत्र और मैय्या २। बिना
पढ़ी इंगलिश थी जो नारी, हुई थी तंग वह भारी।
मुसलिम तो ले गये सारी, खींच कर केश और बैयां ३। बिना
दौपदी गोपियां नारी, धर्म शिक्षा ने ही तारी।
विपत जब आ पड़ी भारी, न छोड़ा संग कन्हैया ४। बिना

धर्म रखा जुगत सारी, सीखो सत्संग में प्यारी।
होवे भव सिन्धू से पारी, महेश घनीशांम खिवैया।५।बिना।

भजन ७६

सुबह शांम नित आना जी, मिल कर सत्संग में।टेक।
आप भी, आना संग साथना को भी लाना।
आ कर हरि गुण, गाना जी।१।मिल।
जो २ सत्संग में आवे, करके सेवा मान बढ़ावे।
आप रहे, निरमाना जी।२।मिल।
दोष न किसी के देखो प्यारी, गुण सीखन में रहो हुश्यारी।
सब से प्रेम बढ़ाना जी।३।मिल।
मिल आपस में करो विचारा बढ़े बुद्धि लाभ है भारा।
दिल से भेद हटाना जी।४।मिल।
मन से राग द्वेष कोखोवे,सत्संग की हान न होवे।
किसी को नहीं दुखाना जी।५।मिल।
सब को अपना आत्म जान,यही परम ज्ञान की खान।
महेश रखो तुम ध्यान। जी।६।मिल।

(मारू भजन)

भजन ७७

मन रे काहे को पाव पसारा, चार दिन का यहां तो गुज़ारा।टेक।
तेरे साथी कूच कर डेरा, तुम को गफलत ने क्यों घेरा।
उठ जाग हुआ उजयारा।१ मन।

जग में आकर न नेकी कमाई, तन धन से न कोई भलाई ।
उलझ गया बीच परिवारा । २ मन ।
खोल आंखे न होवो हैरान, भूला फिरता काहे को प्राणी ।
तेरा प्रभु बिन कौन अधारा । ३ मन ।
आखिर जिस दरबार में जाना, कीया रंच न उसका ध्याना ।
किस गवाह का लिया सहारा । ४ मन ।
सारी आयु बृथा ही खोई, नहीं कोई रक्षक तुम्हारा होई ।
करले तुरत महेश किनारा । ५ मन ।

भजन ७८

क्या तूं सोचे मूर्ख प्राणी, यह तो माया आनी जानी ।टेक।
ऐसे जान जगत की माया, फूस की आग बदल की छाया ।
मन रे देख के क्यों भरमाया, चार दिवस की है जिंदगानी ।१क्या
ऋषि मुनि देव अवतारा, छोड़ा नहीं इसने संसारा ।
बृथा लेते रहे सहारा, हार चले सब राजा रानी ।२क्या
कंस भीम जैसे बलवान, रावण कुम्भ कर्ण पहलवान ।
रहा न उनका नाम निशान, लेखा करते रहे थे ज़बानी ।३क्या
अब भी समय चूक न जावो, महेश अन्त समय पछताओ ।
डेरा उत्तरा खण्ड में लाओ, कह गये ऊधो से कृष्ण ज्ञानी ।४क्या

भजन ७९

दुख रहित सदा आनन्द, आत्म आनन्द पायेंगे ।
अब जान्यो अपना आप, न इसको कभी भुलायेंगे ।टेक

पहली कृपा पिता की, गुरू मेल करा दिया।
तन मन से मदद करके, धन को लुटा दिया।
उनके किये उपकार को, कैसे भुलायेंगे । १ । दुख०।
जैसा था नाम उनका, तिस को सफल किया।
थे मोती राम अमोल, सब नगरी को तार दिया।
तिन की कृपा अपार जो, सब को सुनायेंगे । २ । दुख०।
दे दे कर सद उपदेश, मेरे मन को दृढ़ किया।
पढ़ाकर ब्रह्म विद्या को, मुझे जगा दिया।
ऐसे ब्रह्म वेता जन्म पिता की, शोभा गायेंगे । ३ । दुख०।
श्री माता देवी द्रौपदी, तन मन लगा दिया।
दुनियां की लज्जा छोड़कर, मुझ को पढ़ा दिया।
धन २ पिता और माता पर, बलहारे जायेंगे । ४ । दुख०।
अटूट धनको देकरके, सब को छुड़ा दिया।
दुनिया के दुख सुख से, मुझको बचा दिया।
करी कृपा महेश पर, कभी न भुलायेंगे । ५ । दुख०।

भजन ८०

चिदानन्द चिदानन्द, चिदानन्द गायेंगे ।
हर हाल में अलमस्त, सच्चिदानन्द गायेंगे ।।टेक।।
यह वण तृण पर्वत, पार ब्रह्म दीखता है जो ।
सोई स्वरूप मेरा है, निश्चय करेंगे सो ।
गुरु देव की कृपा से, सुनाते जायेंगे । १ । चिदा०।

जिनकी कृपा कटाक्ष से, अमोघ - सुख मिला।
तिस आत्म सुख को पायके, मेरा तो मन खिला।
तिन के तो गीत हर दम ही, हम गाते जायेंगे। २। चिदा०।
बताई युक्ति एक जो, अमल करूँ मैं सो।
नम्रता ममता आत्मा, सोई स्वरूप हो।
पांच कोश से न्यारा, साक्षी कहलायेंगे। ३। चिदा०।
देह तीन से अलहदा, जिसको पुकारें वेद।
परम धाम यही है, इसका जो जाने भेद।
गुरुदेव की आज्ञा से, बताते जायेंगे। ४। चिदा०।
सतगुर कृपा कटाक्षते, महेश सुखी हमेश।
न कोई एक आपना, न कोई एक देश।
चारों ही कुंट जगीर है, जहां २ भी जायेंगे। ५। चिदा०।

(श्री १०८ स्वामी महां पुरुषजी की जीवनी)

श्री संत सभा के भानु;स्वामी महां पुरुष प्रधान।
भेष भूषण परम सुजान, स्वामी महां पुरुष प्रधान ।।टेक।।
अन्न क्षेत्र आप चलाते, जो २ आते सो राजी जाते।
करते एक २ का ध्यान। १। स्वामी०।
उन्होंने पर उपकार कमाया, साधू सेवा तन मन लाया।
सबको देते आदर मान। २। स्वामी०।
धीरज की थे वह खान, रहते थे बहुत निरमाण।
औरों को देते थे मान। ।३। स्वामी०।

जो प्रण अन्न त्रेत्र का उठाया, स्वासों तक आन निभाया।
सब खा चुके तों छोड़े प्राण ।स्वामी० ।४
जो २ दर्श करन को आते, करके दर्शन बहुत सरहाते।
कहते साधू परम सुजान । स्वामी० ।५
स्त्री पुरुष, गरीब अमीर, सबको देत बंधाय धीर।
उनमें यही अलौकिक ज्ञान ।स्वामी०।६
उन्हों ने सबर प्याला पीता, मुखसे बचन न कोई कीता।
उसत्त करते, सब विद्वान। स्वामी० ।७
हरिद्वार में सप्त सरोवर, कुटिया कमलदास मनोहर।
तिस कुटिया के थे निशान ।स्वामी० ।८
जो करे विरुद्धी भारी, पलट न देंह उत्तर इक वारी।
साधू स्वभाव त्रिमा की खान ।९ स्वामी०
पुत्री महेश्वरी अर्ज गुजारे, नयनों की रोशनी दिल के सहारे।
जाऊं मैं चरणों पर कुरबान ।१०। स्वामी०

भजन ८१

सत गुरु ही आन बचावें यमने बांह पकड़ी,
और न कोई छुड़ावे दुखां ने आ जकड़ी ।।टेक।।
कथा श्रवण हरि भक्ति न कीनी, पूरे गुरु की शरण न लीनी।
सिर धुन २ कर पछतावे ।१। यमने
डर डर जांदे लोकी सारे, धीयां पुतर वीर पियारे।
सभ नूं पिया बुलावे ।२। यमने

सोच विचार करो मन मांही, मतलब के सब साथी राही।
साथ न कोई जावे ।३। यमने
रात अन्धेरी चोर पड़ौसी, कोई न तेरा मित्तर होसी।
बिर्था मोह फैलावे ।४। यमने
जग में बहुत लुटेरे फिरदे, मुख में मीठा खोट हिरदे।
गुप्ती मार लगावे ।५। यमने
संग साथो कोई साथ न जावे, मूर्ख ऐवें मन भरमावे।
निकट न कोई आवे ।६। यमने
सौदा दस्त बदस्ती करना, महेश किसी से भूल न डरना।
यह घाटा कर दिखलावे ।७। यमने

भजन ः २

प्रीतम तैनूं कोई दूर नहीं, पर प्रीत कमानी औखी है।
सब दुनियां प्रीत लगांदी है, पर प्रीत निभानी औखी है। टेक।
प्रभु नाल प्रीत लगा करके, अते हिजर दी धूनी रमा करके।
इस मन की खाक बना करके, तन भस्म रमानी औखी है ।१
मिट्टी विच दाना रल दा ए, तद जाके फलदा फूलदा ए।
इक रूप हो जांदा कुल दा ए, पर हस्ती मिटांनी औखी है ।२।प्री०
सब प्रेमी बन २ बैंदे नी, दिन रात अनलहक कैंहदे नी।
मन्सूर दी वांगन सूली ते, जिंदड़ी लटकानी औखी है ।३। प्री०
महेश्वरानन्द जी दसिया ए जब देख छुरी नूं हसिया ए।
प्रीतम दा पाना सौखा है, पर खल लवानी औखी है ।४। प्री०

भजन ८३

मेरे दिल में हमेशा यही आरज़ू है,
हर घड़ी मुझ को मोहिन तेरी जुस्तजू है। टेक।
न चैन है दिल में न आंखों में नींदर,
है लगन मुझ को मोहिन दिखे तूं ही तूं है।।१।
तेरी कुदरत पर बलिहार क्यों न जाऊं,
पत्ते पत्ते में रंग भरी खशबू है।२। मेरे
जलवे दुनियां के सभ खैंच आगे मेरे,
जब के नज़रों में मेरे समाया ही तूं है।३। मेरे
खोलूं जो आंखें हर तरफ तूं ही तूं है,
मूंदूं जो आंखे दिसे ज्यूं का त्यूं है।४। मेरे
है पूर्ण न दीखे बिना सत गुरों के,
यह गाया है वेदों में मार्ग शुरु है।५। मेरे
करूं किससे महिमा तेरी मेरे मोहन,
महेश के प्यारे दिखे रूबरू है।६। मेरे

भजन ८४

सुन जीव सखे-यह जग छड़ तै नूं जाना पड़ा हां हां जाना पड़ा
देह झूठी दे नाल-लग कर तै नूं भरमाना पड़ा हां, हां भरमाना पड़ा
जग हर रंग भरा था बाजार-सौदा ना कर झलिया। हां
पीठे ठग बैठे परिवार-पूंजी नूं खो चलिया। हां
आगे देवेगां की तूं जवाब-प्रभु जब पूछनगे। हां

जग धोखे की टट्टी है-जित कर कोई मरिया । हां
धोखे में सभ चले गये-जित के तां कोई चलिया । हां
न आवीं धोखे पें-महेश तूं खोल अखियां ।
गुड़ मीठा न बन जावीं, यह जग है मखियां । हां
सुन जीव सखे यह जग छड़ तै नूं जाना पड़ा । हां जाना पड़ा

भजन ८५

झूठे झगड़े हैं सारे संसार दे जी,
नाम जप लै तूं कृष्ण मुरार दे जी । टेक
दुनियां विच तां मन न लगावीं वे,
प्रभु भगती नूं मनों न भुलावीं वे ।
जीवन दुनियां में दो दिन चार दे जी । १ झूठे
तूं ना आया स्वप्न वाली रात दा वे,
बन बैठा जगत वाली जात दा वे ।
पंज चोर तै नूं लुट मार दे जी । २ झूठे
उठ उतरा खण्ड वल जावना जी,
छड़ मोह जे मोक्ष नूं पावना जी ।
कब पहुँचे किनारे प्रभु द्वार जी । ३ ।
इनां विषयां तो मन जब रुकदा वे,
लोकी रोवे महेश तूं हसदा वे ।
पाले मुक्ति मनुष्य तन धार के वे । ४ । झूठे

भजन ८६

देस बिगाना है परदेसी, तूं हुशयार हो जा।
गफलत नींद्र त्याग मुसाफिर, खबर दार हो जा। टेक।

यह तन है जिवें ओस का मोती, हवा लगे उड़ जाय।
कोई न किसी का मित्र बनदा, माता पिता सुत भाय।
झूठा प्यार न होजा। १। तूं

पंछी आये बृक्ष पर बैठे, सुबाह होय उड़ जाय।
इह कुटम्बी हैं राह गुजरू, इन में प्यार न पाय।
देखो धोखा न हो जा। २। तूं

सूये की प्रीती फूल सिम्बल से, रुई को देख पछताया।
रोया है सिर मार २ कर, वह फल कहां लुकाया।
मन पछताव होजा। ३। तूं

जोबन जुआनी रैन अंधयारी, पापों में लिपटा जाय।
अगे बेली कोई न बन दा, उसको आन छुड़ाये।
हुण तां चौकस होजा। ४। तूं

दास महेश कहे सुनो प्रिय बहनो, बेड़ा चक्कर खाय।
गुरु मलाह मिले जो पूरा, उस को पार लंघाय।
जल्दी पार हो जा। ५। तूं

भजन ८७

वृक्षों की मति ले मेरे मनुआ, तूं वृक्षों की मति ले रे ।।टेक।।
सिर अपने पै धूप लवावें, पंथी को छाया देते रे मनुआ ।१। तूं०
जो कोई आवे बाण चलावे, आगे से फल देते रे मनुआ।२। तूं०
लैके कुहाड़ी काटन लागे, मुख से कुछ भी न कहते रे मनुआ ।३।तूं०
जीवत मरे मरे पुन जीवे, ऐसे योग कमावे रे मनुआ ।४। तूं०
दास महेश कठिन यह सीढ़ी- गुरु कृपा से पावे रे मनुआ ।५। तूं०

भजन ८८

की लैना गृहस्थी बन के फकीरी चंगी होंदी ए ।टेक।
फकीरी फकर लोक कमांदे, डेरा जंगलां दे विच लांदे ।
जीवन मुक्ति दा सुख पांदे, फकीरी ।१ की०
फकीरी करिये मन नूं मार, करिये आत्म दा विचार ।
मन विच सत सन्तोष नूं धार, फकीरी । २ की०
सरवस त्यागी स्वामी राम, टीरी विच किया विश्राम ।
उनको बहुत मिला आराम, फकीरी । ३ की०
बहनों चल वसिए उस देश, मन के दूर होवें कलेश ।
ब्रह्मानन्द मिले महेश, फकीरी चंगी होंदी ए । ४ की०

भजन ८९

असी कर्म करिये निष्काम, मन साडे शुद्ध हो जावेंगे ।
नित करिए प्रेम दा जाप, प्रभु जी फिर दर्श दिखावेंगे ।।टेक।।

तन नगरी मन है मन्दिर, परमेश्वर जिसके अन्दर।
दिल साफ कर सत्संग, इस विध आत्म पावोगे। १ असी०
बाहिर दी क्या करे सफाई, अन्दर राग द्वेष दी काई।
करों अन्दरों कूड़ा साफ, प्रभु जी फिर नज़री आवेंगे। २ असी०
जे तैनूं प्रभु मिलन दा चा, सत्संग जाके दर्शन पा।
दसन प्रभु मिलन दा रा, भजन दी रीत बतावेंगे। ३ असी०
सत्संग करिए श्रद्धा धार, बेड़ा होवे जल्दी पार।
तन मन धन दे उन्हां तो वार, महेश जो दर्श दिखावेंगे। ४ असी

भजन ६०

मीरां गिरधर शांम गुण गांवदी,
कृष्ण चरणों में सीस निवांवदी ।।टेक।।
राणे जहर प्याला जदों भेजिया, मीरां अमृत करके पी लिया।
ननद देख २ घबरांवदी ।१। मीरां०
राणे सर्प डब्बी विच भेजिया, मीरां हार जान गल पालिया।
बैठी ननद पई शरमांवदी ।२। मीरां०
मीरां ध्यान देकर देखिया, शालग्राम हार विच पेखिया।
दर्शन ननद अपनी को करांवदी ।३। मीरां०
सास थम्बे के साथ जब बांधिया, मीरां गिरधर नाम अराधिया।
मीरां शांम दे मन विच आंवदी ।४। मीरां०
चक्की सासने जब पिसवाई, नाम जपदी कृष्ण कन्हाई।
बैठ साथ कृष्ण को पांवदी ।।। मीरां०

राणा कर उपाय सब हारिया, मीरा बाई की चरनी सीस धारिया।
मीरां पति चरण सीस धरांवदी ।६। मीरां०
महेश यही रीति सुखदाई है, नम्र भाव तो परम बड़ाई है।
सतगुर बाझ न मुक्ति आंवदी ।७। मीरां०

भजन ६१

हुण मेरी भी सुनो महाराज, भगतां दे राखे सांवरिया !
युग २ भगतां दी रक्षा करदे, आन सवारे काज ।।टेक।। हुण०
ध्रुव दी सुन लई प्रह्लाद दी सुन लई, द्रौपदी दी राखी लाज।१। हुण०
गनका तारी गिध को तारा, जल डूबत गजराज ।२। हुण०
भीलनी के बेर सुदामा के तंदुल, आय प्रभु नरसी के काज ।३। हुण०
साग विदर के घर का खाया, छड दुर्योधन राज ।४। हुण०
खटी लसी गोपियों की भाई, न भाया रुकमणी का साज ।५। हुण०
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, महेश न करते किसी को नाराज ।६। हुण०

भजन ६२

है कौन मारने वाला, जब राम चन्द्र रखवाला ।।टेक।।
जल डूबत गजराज बचाया, यह संसार राम की माया।
राम करे प्रतिपाला ।।१।। है ।।
राम नाम को धुनो लगावो, राम २ कह मुक्ति पावो
राम ही चौड़िन वाला ।।२।। है ।।
गीध अजामिल तार दिये जब, पीपा गनका पार किये सब
जप राम नाम की माला ।।३।। है ।।

भीलणी अहिल्या सदन कसाई, राम जपने से मुक्ति पाई।
जय राघव दीन दयाला ॥४॥ है ॥
सुग्रीव विभीषण राज बैठाए, निर्छल हो कर शरणी आय
थे भगत प्रेम में आला ॥५॥ है ॥
वानर रीछ उतारे भव से, मेरी शुद्ध करो प्रभु अब से।
महेश राम भूपाला ॥६॥ है ॥

भजन ६३

राम जी भगतों के रछपाल, बेड़ा पार लगाने वाले ॥टेक॥
कर्मा बाई की खिचड़ी खाई, भीलनी तेरे मन को भाई।
जूठे बेर जा कर खाये, भगतों के मान बढ़ाने वाले ।१। राम
दुशासन दुष्ट ने चीर उतारे दौपदी रो २ कर अरज गुजारे।
लज्या शाम है हथ तुम्हारे, चीर अनगिनत बढ़ाने वाले ।२। राम
भगत प्रैह्लाद कष्ट सहारा, पिता भय दिखला कर हारा।
तेरा नाम न उसने बिसारा, खम्भे से प्रकट होने वाले ।३। राम
तुमने भगत सुदामा तारे, तिस के कटे दरिद्र सारे ।
सब परिवार के कष्ट निवारे, मनसा पूरी कराने वाले ।४। राम
ध्रुव ने करी तपस्या भारी, जड़ से हिल गई पृथ्वी सारी ।
होगये प्रगट धनुष के धारी, आलहा पदवी देने वाले ।५। राम
नरसी भगत के भात भराये, हरि सांवल शाह बन आये ।
सारे देख २ हर्षाये, यश नरसी को देने वाले ।३। राम

गज गनका सैना नाई, नामे भगत दी लाज रखाई ।
नैया सब दी पार लंघाई, दीना नाथ कहाने वाले ।७। राम
दासी खड़ी है तेरे द्वारे, बिनती करके अर्ज गुजारे ।
बखशो अवगुण मेरे सारे, महेश चरण तो बलिहारे ।८। राम

भजन ६४

असी सत्संग चढ़िये नाव, राम अन्दरों प्रगटावेंगे ।
शम दम दी तार लगायें, गुरुजी फिर चपा चलायेंगे ॥टेक॥
तन बेड़ा जीव सवारी, बिना राम न उतरस पारी ।
करें कृपा धनुष के धारी, भव से पार उतारेंगे ।१। असी
यदि राम से द्रोह कमाना, मूर्ख तूं नहीं सुख पाना ।
बन भगत लोक रिझाना, शान्ति कभी न पावेंगे ।२। असी
यह धोखा अपने साथ, वह वड़े कृपालू नाथ ।
छोड़ कपट शरण तूं जा, प्रेम की भिक्षा पावेंगे ।३। असी
हाथ जोड़ कहे महेश, कर सिमरन राम हमेश ।
तेरे काटें जायें कलेश, चौरासी फेर न जावेगा ।४। असी

सप्तश्लोकी गीता

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं, स याति परमां गतिम् ॥१॥
स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या, जगत्प्रहृष्य त्यनुरज्यते च ।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति, सर्वे नमस्यान्ति च सिद्ध संघा ॥२॥

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरो मुखम् ।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥३॥

कविं पुराण मनुशासितार, मणोरणीयां समनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्ण तमसः परस्तात् ।४॥

उर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेद वित् ।।५॥

सर्वस्य चाहं हृदि सनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्त कृद्वेदविदेव चाहम् ॥६॥

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मांमेवैष्यसि युक्त्वैव मात्मानं मत्परायणः ॥७॥

(चतुः श्लोकी भागवत)

ज्ञानं परम गुह्यं मे यद विज्ञान समन्वितम्,
सरहस्यं तदङ्ग च गृहाण गदितं मया ॥
यावानहं यथाभावो यद् रूप गुण कर्मकः ,
तथैव तत्व विज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात । १

अहमेवास मेवाग्रे नान्यद यत्सदसदात्मकम्,
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ।
ऋृतेऽर्थं यत्प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि,
तद् विन्द्यादात्मनो मायाम् यथा भासो यथातमः ।२

यथा महान्ति भूतानि भूतेषच्चावचेष्वनु,
प्रविष्टान्य प्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम् ।
एतावदेव जिज्ञास्यम् तत्वजिज्ञासुनात्मनः,
अन्वय व्यतिरेकाभ्यां यत्स्यात् सर्वत्र सवदा ।३
एतन्मतं समातिष्ट परमेण समाधिना,
भवान् कल्प विकल्पेषु न विमुह्यति कर्हिचित्,

इति श्रीमद्भागवते महापुराणेऽष्टादस साहस्त्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्वितीय स्कन्धे चतुःश्लोकीभागवतं समाप्तम् ॥४॥

विष्णु सहस्रनाम्

राम रामेति रामेति, रमे रामे मनोहरमे ।
सहस्त्र नाम ततुल्यम्, राम नाम वरानने ॥

एक श्लोकी रामायण

आदौ राम तपों बनादि गमनं, हत्वा मृगं काञ्चनं,
वैदेही हरणं जटायू मरणं; सुग्रीव संभाषणम् ।
बाली निर्द‌लनं समुद्र तरणं, लंका पुरी दाहनं,
पश्चाद्रावण कुम्भ करण हननं चैतद्धिरामायणम् ।

(निर्गुण कीतन)

चिदानन्द, चिदानन्द चिदानन्द हो ।
हर हाल में अलमस्त, सच्चिदानन्द हो ॥१॥

मैं तो चिदानन्द, और मत जानों ।
हर हाल में अलमस्त, सच्चिदानन्द जानों ॥२॥
चिदानन्द चिदानन्द, पुकारा करेंगे ।
श्री गंगा भिलंगना, के मध फिरेंगे ॥३॥
यह है ही चिदानन्द, जगत मत जानो ।
सर्व वासू, देव विश्व मत मानो ॥४॥
कृष्ण राम गोविन्द, हरे मुरारे ।
सभी नाम सच्चिदानन्द पुकारे ॥५॥
रम रह्यो एक चिदानन्द सांई ।
चिदानन्द बाहिर नहीं कोई भाई ॥६॥
पूर्ण अखंड भज, सच्चिदानन्द भज ।
एक चिदानन्द भज, विराट रूप रहा सज ॥७॥
भज पूर्ण सच्चिदानन्द, अद्वैय एक जोई ।
अस्ति भांती प्रिय पूर्ण जो, गावत वेद सोई ॥८॥
इक ओं नाम पुकारो, इक ओं नाम पुकारो ।
इक ओं नाम पुकारो, की सच्चिदानन्द सोई ॥९॥
भज लौ आत्म राम, सार इस तन में जो ।
सभ को वही प्रकाशे, सच्चिदानन्द है सो ॥१०॥
जानोगे स्वरूप जब, ओं धुनी लाओगे ।
पावोगे अंखण्ड जब, सच्चिदानन्द गावोगे ॥११॥

जल एक अधाराई बुद बुदे फेन तरंग ।
नाम रूप असाराई, है एक सच्चिदानन्द ॥१२॥

आत्म रूप पछानो, जिस बिन सूनी नगरिया ।
सतचित आनन्द जानो, कि जिस बिन वृथा उमरिया ॥१३॥

जी अनघड़िया देवा, कौन करे तेरी सेवा ।
घड़े घुड़े को सब कोई पूजे, भोग लगावे मेवा ।१४
सत चित आनन्द नजर न आवे, कैसे करें तेरी सेवा ।१५

न शंख ही फूकेंगे ना, खड़ताल बजायेंगे ।
श्री जैती सच्चिदानन्द, एको ही गायेंगे ।१६

ना ढोलकी पीटेंगे ना, घड़ियाल बजायेंगे ।
एको ही धुनी, सच्चिदानन्द ही गायेंगे ।१७

ना बंसी बजेगी, ना नाद बजायेंगे ।
चिदानन्द चिदानन्द, एको ही गायेंगे ।१८

ना उसतती करेंगे ना, अस्त्रोत गायेंगे ।
एको ही सच्चिदानन्द, रटते ही जायेंगे ।१९

सतचित आनन्द, केवल अनूप है ।
साक्षी चेतन केवल शुद्ध निर्गुण रूप है ।२०

लोहा हुआ तो क्या, शस्त्र हुए तों क्या ।
नाम रूप को मिटा के, सच्चिदानन्द गायेंगे ।२१

सोना हुआ तो वही, भूषण हुए तो वही।
विवर्त अधिष्टान, चिदानन्द गायेंगे ।२२
तंतु में वस्त्र मूरती, एको ही रूप है।
नाना को छोड़, एक सच्चिदानन्द गायेंगे ।२३
कैसा अजब नजाराई, विराट रूप तेरा।
सच्चिदानन्द धाराई। २४
नदियों और पर्वतों में, और खानी चारो जी।
चिदानन्द रूप सारे, लगें बहुत प्यारी जी ।२५
चेतन आनन्द घन, एक रस जानो जी।
नाम रूप भ्रम को, हृदय मत ठानो जी ।२६
है सच्चिदानन्द अखंड, देखो यहब्रह्माण्ड।
सत गुरु मेरे मन, वस गयो परमानन्द ।२७
सानूं इको सच्चिदानन्द गाना चाहिदा।
राग द्वेष को मन से हटाना ही चाहिदा ।२८
अज्ञान वाली वातें, मन अज्ञान वाली वातें।
भूल जाना ही चाहिदा।
सानूं इको सच्चिदानन्द, गाना चाहिदा ।२६
चिदानन्द, चिदानन्द चिदानन्द,
मेरे मन वस गयो परमानन्द ।३०
सच्चिदानन्द इक रस निराकारी
भगतों हित होय सत गुरु अवतारी ।३१

धुनी चिदानन्द वाली, प्यारी पई लगदी।
जै सच्चिदानन्द कई सोनी फबदी ।३२
मेरो मन हर लियो, धुनी चिदानन्द दी।
बोलो सच्चिदानन्दा, कई सोनी सजदी ।३३
निराकार साकार है जो, सच्चिदानन्द है सो ।३४
भज पूर्ण ब्रह्मचिदानन्द, सतचित आनन्द आखंडा ।३५
सुख में दुख में चिदानन्द भजो,
दुख दूर होवे सुख ही सुख हो । ३६
निस दिन भज लै परमानन्द, पूर्ण ब्रह्म चिदानन्दा ।३७
सतचित आनन्द रूप तुम्हारो, जाने नहीं कोई मेवा ।३८
जै सच्चिदानन्द काटो कलेश । ३९
भज साक्षी ब्रह्ममहेश ,सच्चिदानन्द, जोई । ४०
प्रति एक घट मुझसे भरा व्याप्त हूँ मैं प्रांत रोम हूं मैं ओं हूँ।
मैं ओं हूँ मैं ओं हूँ, मैं ओं हूँ मैं ओं हूँ। ४१

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः

———————

सवैया

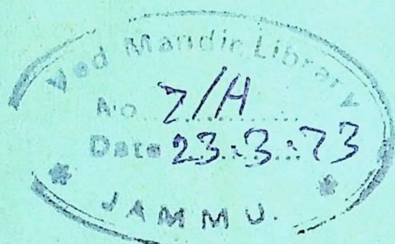
भाग जागे जब पूरब के, तब श्री गुरुदेव दया करि हेरी।
ज्ञान कपाट उघारि दियो तब, मोह निशा दपाते गई फेरी।
थोरेहिं में समुझाय दियो, तब थीर कियो चंचल चित मेरो।
सूझि पड़ी सबही घट साहिब, छूट गयो सब तर्क घनेरो ॥१॥

सोय रह्यो नित मोह निशा महँ, जान पर्यो नहीं राम पियारो।
जन्म अनेक गये स्वप्नान्तर, एक ही बार न जाग्रत धारो।
आदि गुरु तब देख दया कर, तीसा अंतर शब्द उचारो।
चारहु वेद पुराण अठारह, सोध कह्यो यह तत्व विचारो ॥२॥

जो जन पाप हरे जनके, पर पुण्य करे फल आस न कोई।
राम भजे मन लाय सजे, शुभ संत गुरु पद सेवत जोई।
आत्म बोध प्रकाश तिसे, उर जीवत मोक्ष भये जन सोई।
त्याग शरीर मिले ब्रह्म से, जिमि तेज से तेज मिले सुख होई ॥३॥

दोहा—ईश्वर से गुरु पै अधिक, धारे भगती सुजान।
बिन गुरु भगती प्रवीन हु, लहे न आत्म ज्ञान ॥१॥

मात तात भ्राता सुहृद, इष्ट देव नृप आन।
अनाथ सुगुरु सब ते अधिक, दान ज्ञान विज्ञान ॥२॥



मिलने का पता :—

श्री १०८ माता महेश्वरी देवी जी

कुटिया श्री स्वामी कमल दास जी हरिद्वार

दी सैंट्रिल एलैक्ट्रिक प्रैस गोकल रोड लुधियाना में
मि० एल. आर. धवन के प्रबन्ध से छपा ।

